Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

**अल्लाह तआला का आदेश**

وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ وَاَحْسِنُوْا ۛ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :196)

**अनुवाद:** और अल्लाह के मार्ग में खर्च करो और अपने हाथों से अपने आप को हलाक मत करो। और उपकार करो अल्लाह उपकार करने वालों को पसन्द करता है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

# बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 43

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

15 सफर 1439 हिजरी कमरी 25 इख़ा 1397 हिजरी शमसी 25 अक्तूबर 2018 ई.

## अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

**सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।**

**यह पैलातूस मसीह इब्ने मरयम के पैलातूस की अपेक्षा अधिक नैतिक सिद्ध हुआ क्योंकि अदालत के आदेश में वह साहस और हिम्मत से अदालत का पाबंद रहा और उच्चस्तरीय सिफ़ारिशों की उसने कुछ भी परवाह न की और जातिगत और धार्मिक विचार ने भी उसमें कुछ परिवर्तन पैदा न किया। उसने अदालत की गरिमा का पूर्ण ध्यान रखते हुए ऐसा उत्तम आदर्श प्रस्तुत किया कि यदि उसके अस्तित्व को कौम का गौरव और शासकों के लिए आदर्श समझा जाए तो अनुपयुक्त न होगा।**

## *उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम*

वह मुकद्दमा जो मुझ पर बनाया गया वह हज़रत ईसा इब्ने मरयम के मुकद्दमों से अधिक संगीन था क्योंकि हज़रत ईसा पर जो मुकद्दमा किया गया उसकी बुनियाद मात्र एक धार्मिक विवाद था जो जज के निकट एक साधारण बात थी बल्कि न होने के बराबर थी। परन्तु मुझ पर जो मुकद्दमा बनाया गया वह क़त्ल का प्रयास करने का दावा था, और जैसा कि मसीह के मुक़द्दमों में यहूदी मौलवियों ने जाकर साक्ष्य दी थी। आवश्यक था कि इस मुक़द्दमें में भी कोई मौलवियों में से साक्ष्य देता। अत: इस कार्य के लिए ख़ुदा ने मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी को चुना, वह एक बड़ा जुब्बा पहन कर साक्ष्य के लिए आया। जैसा कि सरदार काहिन मसीह को सलीब दिलाने के लिए न्यायालय में साक्ष्य देने हेतु आया था, यह भी उपस्थित हुए। अन्तर मात्र इतना था कि सरदार काहिन को पैलातूस की अदालत में कुर्सी मिली थी क्योंकि यहूदियों के सम्मानीय व्यक्तियों को रोम की सरकार में कुर्सी दी जाती थी और कुछ उनमें से आदरणीय न्यायधीश भी थे। इसलिए इस सरदार काहिन ने अदालत के नियमों के अनुसार कुर्सी प्राप्त की और मसीह इब्ने मरयम एक अपराधी की भांति अदालत के समक्ष खड़ा था। परन्तु मेरे मुक़द्दमों में इसके विपरीत हुआ। अर्थात् यह कि शत्रुओं की कामनाओं के विपरीत कैप्टन डगलस ने जो पैलातूस के स्थान पर अदालत की कुर्सी पर विराजमान था मुझे कुर्सी प्रस्तुत की। यह पैलातूस मसीह इब्ने मरयम के पैलातूस की अपेक्षा अधिक नैतिक सिद्ध हुआ क्योंकि अदालत के आदेश में वह साहस और हिम्मत से अदालत का पाबंद रहा और उच्चस्तरीय सिफ़ारिशों की उसने कुछ भी परवाह न की और जातिगत और धार्मिक विचार ने भी उसमें कुछ परिवर्तन पैदा न किया। उसने अदालत की गरिमा का पूर्ण ध्यान रखते हुए ऐसा उत्तम आदर्श प्रस्तुत किया कि यदि उसके अस्तित्व को कौम का गौरव और शासकों के लिए आदर्श समझा जाए तो अनुपयुक्त न होगा। अदालत एक कठिन मामला है। मनुष्य जब तक समस्त सम्बन्धों से पृथक होकर अदालत की कुर्सी पर न बैठे तब तक उस कर्तव्य का अच्छे रंग में निर्वाह नहीं कर सकता। परन्तु हम इस सच्ची साक्ष्य को प्रस्तुत करते हैं कि इस पैलातूस ने इस कर्तव्य को पूर्णरूपेण पूरा किया, यद्यपि कि पहला पैलातूस जो रोम का था, इस कर्तव्य को भली भांति पूर्ण न कर सका और उसकी बुज़दिली ने मसीह को बड़ी-बड़ी मुसीबतों का लक्ष्य बनाया। यह अन्तर हमारी जमाअत में हमेशा स्मरण योग्य रहेगा जब तक कि संसार क़ायम है और ज्यों-ज्यों यह जमाअत लाखों, करोड़ों की संख्या तक पहुंचेगी, वैसे-वैसे ही इस स्वच्छ हृदय शासक को प्रशंसा के साथ याद किया जाएगा। यह उसका सौभाग्य है कि ख़ुदा ने इस कार्य हेतु उसी को चुना। एक शासक के लिए यह अत्यधिक परीक्षा का अवसर है कि उसके समक्ष दो पार्टियां आएं कि एक उनमें से उसी के धर्म का प्रचारक है और दूसरा पक्ष वह है जो उसके धर्म का कट्टर विरोधी है। परन्तु इस बहादुर पैलातूस ने इस परीक्षा को बड़े साहस से सहन किया। उसको उन पुस्तकों के स्थान दिखाए गए जिन में मूर्खता से ईसाई धर्म के विषय में कठोर शब्द समझे गए थे और एक विरोधी अभियान चलाया गया था। परन्तु उसके चेहरे पर परिवर्तन के कोई लक्षण पैदा न हुए क्योंकि वह अपनी प्रकाशमय अन्तरात्मा के कारण वास्तविकता तक पहुँच गया, और चूंकि उसने मुक़द्दमों की वास्तविकता का सच्चे हृदय से विश्लेषण

**शेष पृष्ठ 12 पर**

## 124 वां
# जलसा सालाना क़ादियान

**दिनांक 28, 29, 30 दिसम्बर 2018 ई. को आयोजित होगा**

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 124 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 28, 29 और 30 दिसम्बर 2018 ई.(शुक्रवार, शनिवार व रविवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

# सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, मई 2016 ई (भाग-12)

☆ ख़लीफा ने कहा: कट्टरता एक महत्त्वपूर्ण समस्या है। इस का सम्बन्ध विश्व शान्ति से है। यदि एक स्वीडिश चरमपंथी विचारों का मानने वाला बनता है, तो वह दुनिया के सभी देशों के लिए खतरा है। शहर ब्रुसेल्स में एक स्वीडिश भी गिरफ्तार हुआ था ना? वह वहां विध्वंस के लिए गया हुआ था। यदि माल्मो शहर का एक आदमी बन गया है, तो केवल माल्मो के लिए एक खतरा है बल्कि दुनिया के सभी देशों के लिए खतरा है। यह एक बड़ी समस्या है जिसे हाथ मिलाने से कोई सम्बन्ध नहीं है।

---

इन्हें (ख़लीफा) को ख़ुद भी बहिष्कार और अन्याय का सामना है। पाकिस्तान के एक कानून के अनुसार, जमाअत के लोगों को मुसलमान के रूप में ख़ुद को कहने की अनुमति नहीं है। यही कारण है कि अन्य मुस्लिम संगठनों ने भी अहमदिया जमाअत पर इतरदाद का आरोप लगाया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जमाअत का कहना है कि मसीह दुनिया में आ चुका है। उनका नाम मिर्ज़ा गुलाम अहमद था और 1889 ई में उन्होंने ख़ुदा तआला का मामूर तथा मुरसल होने का दावा किया था।

---

हमारे और अन्य मुस्लिम संप्रदायों के बीच मतभेद का यह मुख्य कारण है। मिर्ज़ा मसरूर अहमद कहते हैं।

---

## स्टाकहोम से "बैयतुल आफियत" के लिए प्रस्थान, पारिवारिक मुलाकातें, रेडियो, टेलीविज़न और अख़बारों में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यात्रा की कवरेज

---

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

**18 मई 2016 (बुधवार)**

**"बैयतुल आफियत " के लिए प्रस्थान**

इस के बाद कार्यक्रम के अनुसार लगभग बारह बजे यहाँ जमाअत के केंद्र स्टॉकहोम "बैयतुल आफियत" के लिए प्रस्थान हुआ। लगभग आधा समय की यात्रा के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की सदर जमाअत स्टॉकहोम ख़ालिद महमूद के निवास स्थान पर पधारे। यहाँ कुछ मिनट ठहरने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ कछ देर के लिए मुबल्लिग़ सिलसिला स्टॉकहोम आदरणीय काशिफ महमूद विरक साहिब के घर तशरीफ ले गए और यहां लगभग आधे घंटे ठहरे।

बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए आदरणीय डाक्टर महमूद शर्मा साहिब पुत्र आदरणीय मेजर अब्दुल हमीद शर्मा साहिब के घर पधारे। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ सदर जमाअत स्टाकहोम के पास घर पधारे और दोपहर का भोजन किया। सदर जमाअत ने सभी सदस्यों के लिए खाने का प्रबन्ध किया हुआ था।

इस के दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ जमाअत के केंद्र बैयतुल आफियत पधारे। जमाअत के सदस्य अपने प्रिय आक़ा के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। लड़कियां समूह के रूप में दुआ की नज़्में और तराने पढ़ रही थीं। हुज़ूर अनवर ने अपना हाथ ऊंचा कर के सब को अस्सलामो अलैकुम कहा और मिशन हाउस के अंदर आए और नमाज़ जुहर तथा असर जमा कर के पढ़ाई। कार्यक्रम के अनुसार, स्टॉकहोम से गॉथेनबर्ग में प्रस्थान किया।

स्टॉकहोम से गॉथेनबर्ग दूरी 483 कि.मी है। लगभग तीन घंटों की यात्रा के बाद, एक कैफे में थोड़ी देर के लिए यह कारवां रुका। बाद में आगे यात्रा जारी रही और सवा आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की "मस्जिद नासिर" गौथनबर्ग तशरीफ़ लाए।

जमाअत के लोगों की एक बड़ी संख्या अपने प्यारे आक़ा की प्रतीक्षा कर रही थी। जमाअत के लोगों ने जोश के साथ अपने प्यारे आक़ा का स्वागत किया महान उत्साह में, बच्चों ने स्वागत किया और स्वागत गीत प्रस्तुत किया। महिलाएं एक तरफ एक खड़े होकर दर्शन कर रही थीं। हुज़ूर अनवर ने अपना हाथ उठाया और सब को अस्सलामो अलैकुम कहा और मस्जिद के साथ के आवासीय क्षेत्र में पधारे।

नौ बज कर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ मस्जिद नासिर पधार कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई। गोथनबर्ग में सूर्यास्त आधी रात को 9 बज कर 39 मिनट पर है। नमाज़ अदा करने के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ अपने आवासीय क्षेत्र में पधारे।

"मस्जिद नासिर स्वीडन" अल्लाह के फज़ल से जमाअत अहमदिया स्वीडन की पहली मस्जिद है। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस ने 27 सितंबर, 1975 ई को स्वीडन के गॉथेनबर्ग में इस पहली मस्जिद की नींव रखी। हुज़ूर अनवर ने दर्द भरी दुआओं के साथ मस्जिद मुबारक कादियान की वह ईंट स्थापित फ़रमाई जो पहले हज़रत मुस्लेह मौऊद ने दर्द भरी दुआओं के साथ इस मस्जिद के आधार में स्थापित करने के लिए भिजवाई थी।

यह मस्जिद एक छोटी सी पहाड़ी पर स्थित है। 325 वर्ग मीटर छत वाले भाग की मस्जिद की तामीर पूर्ण होने पर 20 अगस्त 1976 ई दिनांक जुमा मुबारक को हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालसि ने मस्जिद का उद्घाटन फरमाया ।

मस्जिद नासिर का क्षेत्र आठ हज़ार वर्ग मीटर है। यह क्षेत्र पहले लीज़ पर था। 1997 ई में जमाअत ने इस क्षेत्र को खरीदा था। इस मस्जिद को 1999 में बढ़ाया गया था। हजरत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला के निर्देश पर, आदरणीया मुहम्मद उस्मान चीनी साहिब ने हुज़ूर के प्रतिनिधि के रूप में मस्जिद की नींव को रखा था।

इसके विस्तार के बाद, एक हज़ार चार सौ वर्ग मीटर पर आधारित, दो बहुत सुन्दर मंज़िल मस्जिद नासीर सहित, एक हज़ार से अधिक नमाज़ियों को अंदर समो सकती है। ग्राउंडफ्लूर में बड़े पुरुषों के हॉल के साथ पुस्तकालय, हॉल, डाइनिंग हॉल, किचन और पांच दफतर हैं। जब कि दूसरी तरफ दूसरी मंजिल पर, महिलाओं के लिए एक बड़ा हॉल छोटे बच्चों के लिए अलग स्थान इस से जुड़े दे हाल तथा लजना के दफतर हैं। इस फ्लोर पर एक गेस्ट हाउस है। इसके अलावा,

शेष पृष्ठ 8 पर

# ख़ुत्बः जुमअः

## आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दो जलील क़द्र सहाबी हज़रत उमारा बिन हज़म और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहो अन्होमा की सीरत का बयान।

**रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि चार बातें ऐसी हैं कि जिसने उन पर अमल किया वह मुसलमानों में से हो गया और जिसने उनमें से एक भी छोड़ी तो बाकी तीन उसे कुछ लाभ नहीं देंगी।**

**अब्दुल्लाह बिन मसऊद जो ग़ैर कुरैशी थे और कबीला हज़ील से संबंध रखते थे एक बहुत ग़रीब आदमी थे और उक़बा बिन अबी मुईत रईस क़ुरैश की बकरियां चराया करते थे। इस्लाम लाने के बाद, वह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में आ गए और आप की संगत से अन्त में विद्वान तथा आलिम बन गए।**

## मक्का में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद सबसे पहले कुरआन को ऊंची आवाज़ में पढ़ने वाले हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद ही थे।

**यह ख़ुदा के दुश्मन मेरी नज़र में इतने अवास्तविक कभी न थे नहीं थे जितने उस समय थे जब वह मुझे मार रहे थे।**

**जिस व्यक्ति की ख़ुशी इस बात में है कि वह कुरआन को इस तरह ताज़गी से पढ़े जिस तरह वह नाज़िल किया गया तो उसे अब्दुल्लाह बिन मसूद से कुरआन शरीफ पढ़ना चाहिए।**

**आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चाल चलन से सब से अधिक निकट अब्दुल्लाह बिन मसूद हैं।**

**अब्दुल्लाह की नेकियों का पलड़ा कयामत के दिन उहद के पहाड़ से भी अधिक होगा।**

**अल्लाह तआला हमें इन उज्ज्वल सितारों के आदर्श और तरीकों पर चलने की तौफीक़ प्रदान करे।**

**ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 28 सितम्बर 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.**

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले दौरे से पहले आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा जो जंगे बद्र में शरीक हुए उनके हालात तथा घटनाओं को बयान कर रहा था। यह विषय आज फिर से शुरू होगा। आज जिन सहाबा का वर्णन है उन में से एक सहाबी हज़रत उमारा बिन हज़म हैं। हज़रत उमारा रज़ि अल्लाह तआला अन्हो उन सत्तर सहाबा में से थे जो बैअत उक्बा सानिया में से थे। उनके भाई हज़रत अम्रो बिन हज़म और हज़रत मुअम्मर बिन हज़म भी सहाबी थे। जंग बद्र, जंग उहद सहित अन्य सभी जंगों में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए। फतेह मक्का के दिन, बन्नू मालिक बिन नजार का झन्डा उनके हाथ में था। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उमारा का भाईचारा हज़रत महरज़ बिन नज़ल से करवाया, हिजरत के बाद उनका भाई बनाया। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु के बाद जो मुरतदीन का फित्ना उठा और उन्होंने मुसलमानों के साथ युद्ध शुरू किया उनके ख़िलाफ लड़ाई में भी हज़रत ख़ालिद बिन वलीद के साथ यह भी शामिल हुए और युद्ध यमामह में उनकी शहादत हुई।

(असहाबे बद्र काज़ी मुहम्मद सुलेमान मुख्य 182 मकतबा इस्लामिया लाहौर 2015 ई)

उनकी माँ का नाम ख़ालिदा पुत्री अनस था।

(सैरुस्सहाब: जिल्द 3, सफ़ा 455 मुद्रित दारुल इशाअत कराची)

अबूबकर बिन मुहम्मद बताते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन सहल को सांप ने काट लिया तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि उन्हें हज़रत उमारा बिन हज़म के पास ले जाओ ताकि वह दम करें। उन्होंने कहा, हे अल्लाह के रसूल! यह तो मरने के क़रीब हैं। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम उमारा के पास ले जाओ वह दम कर देंगे तो अल्लाह चंगा देगा।

(सबलुल हुदा वर्शाद जिल्द 10 पृष्ठ 771 मुद्रित 1995 ई काहिरा)

बेशक आँ हज़रत सल्लल्लाहो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ही आपको यह दम सिखाया और दुआ सिखाई की। इसका मतलब यह नहीं है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नऊज़ोबिल्लाह हज़रत उमारा के दम के मोहताज थे या आप नहीं कर सकते थे। लोगों को विशेष रूप से कुछ कार्यों के लिए नियुक्त किया गया था, लेकिन इसके पीछे, कुव्वत कुदसी और बरकत आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की थी। सीरत इब्ने हश्शाम में लिखा है कि मस्जिदे नबवी में मुनाफिक आया करते थे और मुसलमानों की बातें सुनकर उन का बाद में उपहास उड़ाते थे, उनके धर्म का मज़ाक किया करते थे। कई बार सामने भी इस प्रकार कर लिया करते। एक दिन मुनाफिकों में से कुछ लोग मस्जिदे नबवी में इकट्ठे हुए तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें आपस में कानाफूसी करते देखा। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें मस्जिद से हटाने का आदेश दिया। इसलिए उन्हें मस्जिद से निकाल दिया गया। हज़रत अबू अय्यूब, उमर बिन क़ैस की तरफ गए जो बनो गनम बिन मालिक बिन नज्जार में से था और वह जाहिलियत के ज़माने में उनकी मूर्तियों का मिगरान भी था। उन्होंने उसे पैर से पकड़ा और मस्जिद से बाहर खींच लिया। वह कह रहा था, हे अबू अयूब! क्या तू मुझे बनू सअलबा की मज्लिस से निकालेगा? फिर आप राफेअ बिन वदीअ की तरफ गए और वह भी बनी नज्जार में से थे। उसे भी अपनी चादर में लपेटा और ज़ोर से खींचा और एक थप्पड़ मार कर उसे मस्जिद से बाहर खींच लिया। अबू अय्यूब कह रहे थे हे ख़बीस मुनाफिक़ तुझ पर लानत हो! आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मस्जिद से दूर चले जा। हज़रत उमारा बिन हज़म, ज़ैद बिन अमरो की तरफ गए और उसकी दाढ़ी से उसे पकड़ा और घसीटते हुए बाहर ले गए और मस्जिद से बाहर निकाल दिया। तब हज़रत उमार ने अपने दोनों हाथों को उस के सीने पर इतनी ज़ोर से मारा कि वह गिर गया। उसने कहा, हे उमारा! तुमने मुझे चोट पहुंचाई है हज़रत उमारा ने उससे कहा, हे मुनाफिक! अल्लाह तुम्हें हलाक करे। जो अज़ाब अल्लाह तआला ने तेरे लिए तैयार किया है वह उससे है बहुत बड़ा है। अत: आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मस्जिद के निकट मत आना।

(सीरत इब्ने हश्शाम मुख्य 246 मुद्रित दार इब्ने हज़म 2009)

जंग तबूक के अवसर पर जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तबूक जा

रहे थे रास्ते में एक जगह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ऊँटनी कसवा खो गई थी। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसे खोजने के लिए बाहर निकले। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा उसे तलाश करने के लिए निकले। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास हज़रत उमारा बिन हज़म थे कि बैअत उक़बा में शामिल हुए थे और बद्री सहाबी थे जैसा कि उल्लेख हो चुका है, और वर्णन करने वाले हज़रत अम्रो बिन हज़म भाई थे। फिर बताते हैं कि हज़रत उमारा के होदज में ज़ैयद बिन सलत था, यानी वह उन लोगों में शामिल था जो उनकी सवारियों आदि पर निर्धारित था, जो ऊंट की सवारी थी उस पर होदज रखने वाला था। वह कबीला बानो किनकाआ का था और वह एक यहूदी था। ऊंट की सवारी के लिए बैठेने के लिए जो सीट होती है उस को रखने वाले कुछ लोग तय किए गए थे। यहूदी था फिर मुसलमान बन गया और उस ने निफाक दिखाया। ज़ैद जो मुसलमान था लेकिन दिल में पाखंड थी बड़ा मासूम बन कर पूछने लगा कि क्या मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह दावा नहीं करते कि वह नबी हैं और वह तुम्हें आसमान की खबरों से अवगत करते हैं जबकि वह ख़ुद नहीं जानते कि उनकी ऊंटनी कहां गई है। इस समय हज़रत उमारा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास थे। यह बात आप तक भी किसी तरह पहुंची या इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस मुनाफिक का मुंह बन्द करने के लिए फरमाया कि वास्तव में मैं नहीं जानता हूं अल्लाह तआला बताता है तो मैं बताता हूं और फिर आप ने उस पाखंडी का मुंह बंद करने के लिए कहा, अल्लाह तआला ने सूचना भी दे निश्चय अल्लाह तआला ने मुझे ऊंटनी के बारे बताया है कि वह अमुक घाटी में है और एक घाटी की ओर इशारा किया। उसकी महार एक पेड़ से फंस गई है, फिर जाओ और इसे मेरे पास ले लाओ। तो सहाबी गए और इसे लाए। तब अल्लाह तआला ने उस मुनाफिक का मुंह बन्द करने के लिए आपको दिखा दिया कि ऊंटनी कहाँ खड़ी है और किस स्थान पर खड़ी है।

बहीकी और अबू नईम वर्णन करते हैं कि हज़रत अम्मार अपने होदज की तरफ गए और कहा कि अल्लाह की कमस आज एख अजीब बात हुई। अभी नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें एक व्यक्ति की बात के बारे में बताया जिस से अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सूचित किया था। यह स्पष्ट है कि अल्लाह तआला ने आपको उस मुनाफिक की बात से सूचित किया था और यह ज़ैद इब्न सलत की बात थी। हज़रत उमारा के होदज में एक व्यक्ति ने बताया कि अल्लाह की क़सम ज़ैद ने आप के आने से पहले वह बात है जो आप ने अभी बताई है कि अल्लाह तआला ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बताया। तो आपके आने से पहले ज़ैद ने वही यही बात थी। इस अवसर पर, हज़रत अम्मारा ने ज़ेद को गर्दन सो दबोच लिया और अपने साथियो को कहने लगे कि हे अल्लाह के बन्दो ! मेरे होदज में एक सांप था और उसे अपने होदज से बाहर निकालने से अनजान था और ज़ैद को संबोधित कर के कहा कि भविष्य में मेरा तुम से कोई संबंध नहीं। कुछ लोग मानते हैं कि जैद ने बाद में तौब: कर दी और कुछ लोगों का मानना था कि वह उसी तरह शरारतों में शामिल रहा यहां तक कि मर गया।

(तारीख़ अलख़मीस जिल्द 3 पेज 18 जंग तबूक मुद्रित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत 2009 ई)

हज़रत ज़्यादा बिन नईम हज़रत उमारा बिन हज़म से रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि चार बातें ऐसी हैं कि जिसने उन पर अमल किया वह मुस्लमानों में से हो गया और जिस ने उन में से एक भी छोड़ी तो बाकी तीन में से कोई उसे लाभ नहीं देगी। मैंने हज़रत उमार से पूछा कि वे चार बातें कौन सी हैं उन्होंने बताया कि वह नमाज़ है, ज़कात है, रोज़ा है और हज है।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 4 पेज 129 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत)

इन चारों बातों पर ईमान लाना और अनुकरण करना ज़रूरी है। नमाज़ भी फर्ज़ है। ज़कात भी जिन पर फर्ज़ है उन पर ज़रूरी ज़रूरी है तो फर्ज़ है। स्वास्थ्य की स्थिति में रोज़े भी फर्ज़ हैं। और हज भी उन पर फर्ज़ है जो अदा कर सकते हैं यह फर्ज़ उन को अदा करना ज़रूरी है। बहरहाल इन सभी चार बातों पर ईमान लाना आवश्यक है और इनका पालन करना भी आवश्यक है। अब ये सब बातें असदुल ग़ाब: में लिखी गई हैं। यही किताबें हैं, मुसलमान ख़ुद ही अपने मुसलमान होने की परिभाषा करते हैं और खुद ही ऐसे भी उलेमा पैदा हो गए हैं जो कुफ्र के फतवे लगाते हैं और उन्होंने मुसलमान होने के लिए अपनी परिभाषा बनाई हुई है।

दूसरे सहाबी जिनका आज उल्लेख किया जाएगा अब्दुल्लाह बिन मसऊद है। उनका उपनाम अब्दुल रहमान है। वह कबीला बनू हुज़ैल से संबंधित थे और उसकी मां का नाम उम्मे अब्द है। उन की वफात 32 हिजरी में हुई। उनके पिता का नाम मसऊद बिन ग़ाफल था। अब्दुल्लाह बिन मसऊद की गिनती इस्लाम के आरम्भिक सहाबा में से है। उमर की बहन हज़रत फ़ातिमा बिन्त ख़त्ताब और उनके पति हज़रत सईद बिन ज़ैद ने जब इस्लाम स्वीकार कर लिया तो आप भी उसी समय मुसलमान हुए थे।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 3, सफ़ा 381-382, 387 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत) और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दारे अरकम में प्रवेश से पहले ही ईमान लाए थे, (अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, सफ़ा 112 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत 1990 ई)

वह जगह जो मक्का में मुसलमानों के इकट्ठे होने के लिए बनाई गई थी। अब्दुल्लाह बिन मसऊद का वर्णन है कि मैं इस्लाम को स्वीकार करने वाला छठा व्यक्ति था। उस समय, हम धरती पर छह लोगों को छोड़कर मुसलमान नहीं थे। अपने इस्लाम को स्वीकार करने की घटना बताते हुए हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद बताते हैं कि मैं जब वयस्क होने की आयु को पहुंचा, ऐसी उम्र को पहुंच गया जब सही पहचान भी होती है, अच्छे-बुरे का अंतर पता लग जाता है, यौवन की उम्र होती है। एक दिन उक्बा बिन अबी मुईत की बकिरयां चरा रहा था। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके पास आए और अबू बकर भी आपके साथ आए। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझसे कहा, तुम्हारे पास कुछ दूध है?" मैंने हां मगर मैं अमीन हूं दे नहीं सकता। बचपन से ही उन में बहुत नेकी थी। आं हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कोई बकरी ले आओ जो गाभन न हो, ऐसी बकरी जो गाभन नहीं है, दूध नहीं दे रही उसे ले आओ। कहते हैं एक जवान बकरी आपके पास ले गया तो रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसके पैर बांध दिए, उसके थन पर हाथ फेरना शुरू किया और दुआ की यहाँ तक कि दूध उतर आया। फिर हज़रत अबूबकर एक बर्तन ले आए और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस बर्तन में दूध धोया और हज़रत अबूबकर से फरमाया कि पियो। अबू बकर ने दूध पी लिया। बाद में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पिया और फिर आप ने थनों पर अपना हाथ फेरा और कहा कि सिकुड़ जाओ जैसा कि वह पहले सिकुड़े थे और पहले जैसे हो गए। मैंने कहा, हे अल्लाह के रसूल, मुझे भी इस कलाम में से कुछ दें जो आपने कुछ पढ़ा है। इस पर आप ने मेरे सिर पर हाथ फेरा और कहा कि तुम सिखे सिखाए नौजवान हो। आप बताते हैं कि आप ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किसी वास्ता के बिना कुरआन की सत्तर सूरतें याद की थीं।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 3, सफ़ा 382 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत)

उनके बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब भी सीरते ख़ात्मुन्नबिय्यीन में लिखते हैं कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद जो ग़ैर कुरैशी थे और कबीला हज़ील से संबंध रखते थे एक बहुत ग़रीब आदमी थे और अक़बा बिन अबी मुईत रईस क़ुरैश की बकरियां चराया करते थे। इस्लाम लाने के बाद वह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में आ गए और आप की संगत से एक आलिम बन गए। हनीफा फिक्ह: की बुनियाद अधिकतर इन्हीं की बातों तथा इज्तिहाद पर आधारित है।

(सीरत ख़ात्मुन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम .ए पृष्ठ 124)

उनके धार्मिक ज्ञान तथा नेकियों के बारे में यह रिवायत है: इब्ने मसऊद कहते हैं कि लोग जानते हैं कि में किताबुल्लाह का ख़ूब जानने वाला हूं। कुरआन में कोई सूरह या आयत नहीं है, लेकिन मुझे पता है कि वह कब उतरी और कहां उतरी। अबूवाइल रावी कहते हैं कि इस बयान को किसी ने मना नहीं किया।

(असहाबे बद्र काज़ी मुहम्मद सुलेमान पृष्ठ 107 मकतबा इस्लामिया लाहौर 2015 ई)

जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने यह बात कही। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जिन चार सहाबा से कुरआन पढ़ने और सीखने की नसीहत फ़रमाई उनमें हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद का नाम शीर्ष पर है।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल मनाकिब अध्याय मनाक़िब अब्दुल्लाह बिन मसऊद हदीस 3760)

दीबाचा तफसीरुल कुरआन में इस का विवरण हज़रत मुस्लेह मौऊद ने इस तरह वर्णन की है कि चूंकि लोगों में कुरआन मजीद को याद करने का शौक बहुत अधिक हो गया था। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुरआन

पढ़ाने वाले शिक्षकों की एक जमाअत तैय्यार फरमाई जो पूरा कुरआन आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से याद करके आगे लोगों को पढ़ाते थे। यह चार शीर्ष उस्ताद थे जिनका काम था कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कुरआन शरीफ पढ़ें और लोगों को कुरआन पढ़ाएं। फिर उनके अधीनस्थ और कई सहाबी लोगों को कुरआन शरीफ सिखाते थे। इन चार बड़े उस्तादों के नाम इस प्रकार हैं: अब्दुल्लाह बिन मसऊद, सलिम, मुआज़ बिन जबल उबै बिन कअब। उनमें से पहले दो मुहाजिर हैं और अन्य दो अंसारी है। कार्यों के अनुसार अब्दुल्लाह बिन मसऊद एक मज़दूर थे, सालिम एक आज़ाद किए गए ग़ुलाम थे, मुआज़ बिन जबल और उबै इब्न कअब मदीना के रईसों में से थे। मानो हर गिरोह के लिए नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सारे गिरोहों को सामने रखते हुए कारी निर्धारित कर दिए थे। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि

خُذُوا الْقُرْاٰنَ مِنْ اَرْبَعَةٍ مِنْ عَبْدِاللّٰهِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ وَسَالِمٍ وَمَعَاذِ ابْنِ جَبَلٍ وَاُبَيِّ بِنِ كَعْبٍ

जो लोग कुरआन पढ़ना चाहते हैं वे कुरआन चार पढ़ते हैं। अब्दुल्लाह बिन मसऊद, सलाम, मुज्ज इब्न जबल और अबी बिन काब। हज़रत मुस्लेह मौऊद बाद में लिखते हैं कि यह चार तो वे थे जिन्होंने पूरा कुरआन आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सीखा या आप को सुना कर उसका सुधार करा लिया लेकिन इसके अलावा भी कई सहाबा आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सीधे, कुछ कुरआन सीखते थे। इसलिए एक रिवायत में आता है कि एक बार अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने एक शब्द को और तरह पढ़ा तो उमर ने उन्हें रोका और कहा कि इस तरह नहीं इस तरह पढ़ना चाहिए। इस पर अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने कहा कि नहीं मुझे आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसी तरह सिखाया है। उमर उन्हें पकड़कर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ले गए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा कि यह कुरआन गलत पढ़ते हैं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अब्दुल्लाह बिन मसऊद को कहा कि पढ़ो। जब उसने यह सुना, तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि यह तो ठीक है। उमर ने कहा, हे अल्लाह के रसूल! मुझे तो आपने यह शब्द दूसरे तरीके से सिखाया था। आपने कहा कि यह भी ठीक तरीका है जिस तरह तुम पढ़े रहे हो। तो हज़रत मुस्लेह मौऊद ने निष्कर्ष निकाला कि इससे पता चलता है कि केवल यही चार सहाबा आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कुरआन नहीं पढ़ते थे बल्कि दूसरे लोग भी पढ़ते थे। इसलिए उमर का यह सवाल कि मुझे आप ने इस तरह पढ़ाया है बताता है कि उमर भी नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पढ़ते थे।

(उद्धरित दीबाचह तफसीर कुरआन, अनवारुल उलूम जिल्द 20 पृष्ठ 427-428)

एक रिवायत है कि मक्का में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद सबसे पहले कुरआन सब के सामने पढ़ने वाले हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ही थे। अत: यह घटना इस तरह मिलती है कि एक दिन सहाबा जमा थे और आपस में कह रहे थे कि क़ुरैश ने कुरआन की ज़ोर से तिलावत कभी नहीं सुनी। क्या कोई उन्हें सुना सकता है? अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने कहा कि मैं सुना सकता हूं। लोगों ने कहा कि हमें डर है कि कहीं कुफ्फार तुम्हें चोट न पहुँचा दें। तुम तो मज़दूर आदमी हो ताकि तुम्हारे बजाय कोई प्रभावशाली व्यक्ति हो जो कि काफिर अगर उसे मारना भी चाहें तो उसका कबीला उसे बचा लेगा। हज़रत अब्दुल्लाह इब्न मसऊद ने कहा, इस की चिंता मत करो, मुझे अल्लाह बचाएगा। इन सहाबा में अजीब जोश था। दूसरे दिन चाशत के समय सुबह आप मकामे इब्राहीम पहुंचकर ज़ोर से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلرَّحْمٰنُ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ

कुरआन सुनाना शुरू कर दिया। कुरैश जो अपनी मज्लिसों में बैठे हुए थे, आप के कार्यों से आश्चर्यचकित थे। कुछ ने कहा, ये उन आयतों में से एक है जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वर्णन करते हैं। यह सुन कर सब खड़े हो गए और आप के मुंह पर मारना शुरू कर दिया लेकिन आप जो पढ़ना चाहते थे उसे पढ़ते रहे। बाद में जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद सहाबा के पास वापस गए तो आप के मुंह पर ठप्पड़ के निशान देखकर सहाबी कहने लगे कि हमें इसी बात का खतरा था कि तुम्हें मार पड़ेगी। इस पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने कहा कि यह अल्लाह के दुश्मन मेरी नज़र में इतना बे हकीकत कभी नहीं थे जितने उस समय थे जब वे मुझे मार रहे थे। यदि तुम चाहते हो तो मैं कल भी ऐसा करने के लिए तैयार हूं। सहाबा ने कहा, इतना ही काफी है कि तुम ने उन्हें वह चीज़ सुना दी है जिसे वे सुनना नहीं चाहते थे।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 3, सफ़ा 383 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद इस्लाम स्वीकार करने के बाद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें अपने पास रख लिया। आप आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा करते थे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आपसे कह दिया था कि जब तुम मेरी आवाज़ सुन लिया करो और घर में पर्दा न पड़ा हो तो अनुमति के बिना अंदर आ जाया करो। घर में अगर पर्दा गिरा हुआ है तो बिना पूछे नहीं आना और अगर पर्दा उठा हुआ है, दरवाज़ा खुला है मेरी आवाज सुनी है तुमने तो आ जाया करो तुम्हें अनुमति है। इसका मतलब है कि ऐसा कोई समय नहीं है कोई महिला नहीं है। आप आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हर काम करते थे। आपको जूती पहनाते । अगर कहीं साथ जाने की ज़रूरत होता तो साथ जाते। जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम स्नान फरमाते तो पर्दा लेकर खड़े रहते। सहाबा में आप साहबुस्सवाक के उपनाम से मशहूर थे।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 3, सफ़ा 383 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत)

एक और रिवायत के अनुसार आप को साहबुस्सवाक, साहबुल वसाद और साहेबु न्नअलैन भी कहा जाता है।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पेज 113 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत 1990)

अब्दुल्लाह बिन मसऊद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गोपनीय थे, आप के बिस्तर बिछाने वाले, आप की मिसवाक और जूती आदि रखने वाले थे। यह जो अरबी शब्द बोले गए हैं वे ये थे कि आप का बिस्तर बिछाने वाले थे, मिसवाक करवाते थे, स्नान करवाते थे, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए नहाने का प्रबंधन करते थे, आप के बिस्तर बिछाते थे। बिस्तर-बिछाने वाले को साहिबुलस्सवाद कहते हैं। और आप की मुबारक जूतियां रखते और ठीक करने का काम भी करते थे इसलिए साहेबु न्नअलैन भी आप को कहा जाता है। वुज़ू का पानी पी रखने वाले थे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब भी यात्रा पर जाते थे तो आप यही काम करते।

अबू-मलीह से मरवी है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब स्नान फरमाते तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद पर्दा करते थे और जब आप सोते तो आप जागृत रहते थे। आप के साथ सफर में सशस्त्र जाते थे।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पेज 113 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत 1990 ई)

हज़रत अबूमूसा रिवायत करते हैं कि जब हम यमन से नए नए पहली बार आए यही समझते थे कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहलेबैत में हैं क्योंकि उनके और उनकी माँ की आवाजाही आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के यहाँ बहुत ज्यादा थी।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 3, सफ़ा 384 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत)

घर में आना जाना बहुत ज्यादा था। जितना काम करते थे और माता भी आती जाती थीं तो इस से यह कहते हैं कि हम जब नए नए मदीना में आए तो हम समझे कि यह भी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहलेबैत में हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद दोनों हिजरतों में शामिल थे हिजरत हब्शा भी और हिजरत मदीना में भी। जंग बद्र, जंग उहद जंग ख़दक और बैअत रिज़वान इत्यादि में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल थे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद जंग यरमूक में शामिल हुए। आप उन सहाबा में से थे जिन्हें आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने जीवन में ही जन्नत की बशारत दी थी।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 3, सफ़ा 383 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत)

जंग बद्र में अबूजहल को अंजाम तक पहुंचाने में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद का भी हिस्सा है। हज़रत अनस से मरवी है कि जंग बदर के अंत में आं हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि क्या कोई है जो अबूजहल के बारे में सही समाचार लाए। अब्दुल्लाह बिन मसऊद गए और देखा कि अबूजहल युद्ध के मैदान में गंभीर रूप से घायल है और जान जाने की हालत में पड़ा है। उस स्थिति में इसे अफरा के पुत्रों ने इस अवस्था में पहुंचाया था। इब्ने मसऊद ने उसकी दाढ़ी पकड़ कर कहा कि क्या तुम ही अबू जहल हो? उन्होंने उस स्थिति में बहुत

गर्व से जवाब दिया। क्या कभी मुझ से बड़ा सरदार भी तुम ने मारा है।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल मगाज़ी हदीस 3962)

पहली रिवायत तो बुखारी की थी इसके बारे में सही मुस्लिम की रिवायत है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने उसकी दाढ़ी पकड़ कर कहा कि क्या तुम अबू जबल हो? अबू जहल ने कहा, तुम ने आज से पहले मेरे जैसा बड़ा आदमी कत्ल किया है? अबू जेहल ने कहा काश मैं एक किसान के हाथ से मार न जाता।

(सही मुस्लिम किताबुल जिहाद हदीस 4662)

मदीना के दो लड़के थे जिन्होंने कत्ल किया था। उस को इस अवस्था में पहुंचाया था। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह तआला अन्हो ने भी तफसीर कबीर में इस का विवरण लिखा है कि किस तरह दुश्मन ईर्ष्या की आग में सारी उम्र जलते रहे और फिर मरते हुए भी उसी आग में जल रहे थे। आप लिखते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद कहते हैं कि युद्ध के बाद मैंने देखा कि अबूजहल एक जगह ज़ख्मों की तीव्रता के कारण कराह रहा है। मैं उसके पास गया और मैंने कहा कि सुनाओ क्या हाल है? उस ने कहा मुझे मेरी मृत्यु के लिए कोई दु:ख नहीं है, सैनिक अंत में मरा ही करते हैं। मुझे खेद है कि मुझे तो दुख इस बात का है कि मदीना के दो अंसारी लड़कों के हाथों मर तो रहा हूँ। मर तो मैं रहा हूं तुम इतना उपकार कर दो कि तलवार से मेरी गर्दन काट दो ताकि इस कष्ट से मैं आज़ाद हो जाऊं और मेरा यह दर्द समाप्त हो जाए। लेकिन देखना मेरी गर्दन ज़रा लंबी काटना क्योंकि जरनैलों की गर्दन हमेशा लंबी काटी जाती है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने कहा कि मैं तेरी इस अंतिम हसरत भी कभी पूरा नहीं होने दूंगा और थोड़ी के पास तेरी गर्दन काटूंगा। अत: उन्होंने थोड़ी के पास तलवार रख कर सिर शरीर से अलग कर दिया। हज़रत मुस्लेह मौऊद ने लिखा है कि देखो यह कितनी बड़ी आग थी जो अबु जेहल को जला कर राख कर रही थी कि सारी उम्र इस बात पर जलता रहा कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जो नुकसान हम पहुंचाना चाहते हैं वह पहुंचा नहीं सके। फिर मरने लगा, मौत की जो हालत आई तो उस समय इस आग में जल रहा था कि मदीना के दो अनुभवहीन नौजवान लड़कों के हाथों मारा जा रहा है। और फिर मरते समय उसने जो अंतिम इच्छा थी वह भी पूरी नहीं हुई और थोड़ी के पास से उसकी गर्दन काटी गई।

(उद्धरित तफसीर कबीर जिल्द 6 पृष्ठ 461)

बहरहाल हर प्रकार की आगों में जलता हुआ ही वह दुनिया से चला गया।

जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद हिजरत करके मदीना आए तो हज़रत मुआज़ बिन जबल के यहां आप की निवास था। कुछ के अनुसार, आप हज़रत साद बिन ख़ालिद के पास रहे। मक्का में आपका भाईचारा हज़रत ज़ुबैर बन अलअवाम से हुआ था जबकि मदीना में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मआज़ बिन जबल को आप का भाई बनाया था। मदीना के शुरुआती दिनों में आप की वित्तीय स्थिति अच्छी नहीं थी इसलिए आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब मुहाजरीन के लिए मस्जिदे नबवी के पास आवास की कुछ व्यवस्था की तो बनो जोहरा के कुछ लोगों ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद को अपने साथ रखने में कुछ हिचकिचाहट की कि यह एक मज़दूर आदमी है, ग़रीब आदमी है, हम लोग बड़े आदमी हैं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब ज्ञान हुआ तो आप ने अपने इस ग़रीब और कमज़ोर सेवक के लिए सम्मान दिखाते हुए कहा कि अल्लाह तआला ने मुझे इसलिए भेजा है कि तुम लोग यह अंतर रखो। याद रखो ख़ुदा तआला उस क़ौम को कभी बरकत अता नहीं करता जिस में कमज़ोर को उसका अधिकार नहीं दिया जाता और फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद को मस्जिद के पास जगह दी जबकि बनो ज़ोहरा मस्जिद को मस्जिद के पीछे एक कोने में जगह दी।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, सफ़ा 112-113 प्रकाशित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत 1990 ई), (सीरत सहाबा रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ) हाफिज़ मुज़फ्फर अहमद पेज 275 प्रकाशित किया नज़ारत प्रकाशन रबवा 2009 ई)

इब्ने मसऊद बताते हैं, खुद उनका बयान है कि एक बार आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से कहा कि मुझे सूर: निसा पढ़कर सुनाओ। अब्दुल्लाह बिन मसऊद अपनी ख़ुद की घटना बयान कर रहे हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मुझे सूरे निसा पढ़कर सुनाओ। मैंने कहा,मैं भला आप को क्या सुनाऊं है कि आपने इसे आप को भेजा है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मुझे अच्छा लगता है कि कोई दूसरा व्यक्ति तिलावत करे और मैं सुनूं। बताते हैं कि मैंने पढ़ना शुरू किया और जब इस आयत पर पहुंचा कि

فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ شَهِيدًا

(निसा 42 ) तो क्या हाल होगा जब हम प्रत्येक समुदाय में से एक गवाह लेकर आएंगे और हम तुमको उन सब पर गवाह बनाकर लाएंगे तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आंखों से आंसू बहने लगे। यह रिवायत में आता है कि आपने कहा अब बस करो।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 3, सफ़ा 384 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत), (सही अल-बुख़ारी किताबुल फज़ायल हदीस 5050)

एक बार उमर फारूक अराफात के स्थान पर ठहरे हुए थे कि एक व्यक्ति आपकी सेवा में उपस्थित होकर कहने लगा हे अमीरुल मोमेनीन ( इन की ख़िलीफत के समय की बात है) मैं कूफा से आया हूं। वहां मैंने देखा है कि एक आदमी कुरआन की आयतों को बिना देखे इमला करता है। इस पर आपने क्रोध में कहा कि तेरा बुरा हो। (अरबों की शैली है।) कौन है वह व्यक्ति? उस ने डरते डरते कहा अब्दुल्लाह बिन मसऊद। यह सुनकर, हज़रत उमर का क्रोध शांत हो गया और यहां तक कि पहली स्थिति में लौट आया। फिर फरमाने लगे कि मैं इस काम अब्दुल्लाह बिन मसऊद से अधिक किसी और हकदार नहीं समझता।

( मसनद अहमद बिन हंबल जिल्द 1 पृष्ठ 128 हदीस 175 मुद्रित आलम अलकुतुब बैरूत 1998 ई) वह बिना देखे कुरआन लिख सकते हैं। हज़रत उमर बताते हैं कि एक बार रात के समय हज़रत अबूबकर और मैं आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद के पास से गुज़रे। वे नाफिल अदा कर रहे थे और कुरआन करीम की तिलावत कर रहे थे। कियाम में खड़े थे। लितावत हो रही थी। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े होकर आप की तिलावत सुनने लगे। फिर अब्दुल्लाह बिन मसऊद रुकू में गए और फिर सिज्दा में गए। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि हे अब्दुल्लाह अब जो माँगोगे वह तुम्हें दिया जाएगा। तब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहाँ से विदा हो गए और फरमाया कि जिस व्यक्ति की ख़ुशी इस बात में हो कि वह कुरआन करीम को इस तरह ताज़गी से पढ़े जिस तरह वह उतारा गया तो उसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद से कुरआन शरीफ पढ़ना चाहिए। यह मस्नद अहमद बिन हंबल की रिवायत है। (अहमद बिन हंबल जिल्द 1 पृष्ठ 156-157 हदीस 265 मुद्रित आलमुल कुतुब बैरूत 1998)

हज़रत अब्दुर रहमान बिन यज़ीद से यह रिवायत है कि हम हज़रत हुज़ैफह के पास गए और कहा कि हमें ऐसे व्यक्ति का पता बता दें जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चाल चलन से अधिक करीब हो, उस तरीके पर चलने वाला हो और वही काम करने वाला हो या निकटतम हो जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क्या करते थे ताकि हम उस से ज्ञान प्राप्त करें और हदीसें सुनें। तो उन्होंने कहा आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चाल चलन के सबसे अधिक करीब अब्दुल्लाह बिन मसऊद हैं।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 3, सफ़ा 385 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत)

उन के सुन्नते रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पालन करने के शौक और जोश का यह आलम था कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु के बाद सहाबा से जब यह सवाल किया जाता कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से आदतों और गुणों और सीरत और श्माइल के अनुसार आप के सहाबा में से निकटतम कौन है जो हज़रत हुज़ैफह बयान फ़रमाते थे कि मेरे ज्ञान के अनुसार चाल ढाल, बातचीत और नैतिकता और गुणों के अनुसार अब्दुल्लाह बिन मसऊद नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सबसे क़रीब हैं। शायद यही कारण है कि नबी करीम फरमाते थे कि मुझे तो वही बातें अपनी उम्मत के लिए पसंद हैं जो अब्दुल्लाह बिन मसऊद को मरग़ूब हैं। यह बुख़ारी हदीस है।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल मनाकिब अब्दुल्लाह बिन मसऊद हदीस 3762)

हज़रत अलकमह से मरवी है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद को उनके तरीके, उनके हुसने सीरत और उनकी मयानी रवी में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से उपमा दी जाती थी ।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पेज 114 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत 1990 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद के बेटे उबैदुल्लाह बताते हैं कि आपकी आदत

थी कि जब रात को लोग सो जाते तो वह तहज्जुद के लिए उठते। एक रात मैं उन्हें सुबह तक गुनगुनाते हुए सुना जैसे मधुमक्खी गुनगुनाती है।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 3, सफ़ा 386 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत)

अर्थात दुआ में हल्की हल्की गुनगुनाहट के साथ दुआ कर रहे थे या तिलावत कर रहे थे।

हज़रत अली से रिवायत है कि आं हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अगर बिना सलाह के किसी को अमीर बनाता तो अब्दुल्लाह बिन मसऊद को बनाता।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 3, सफ़ा 385 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत)

फिर एक जगह हज़रत अली की यही बात इस तरह बयान हुई है, तब्कातुल कुबरा में लिखा है कि हज़रत अली से मरवी है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से कहा अगर मुसलमानों की मजलिसे शूरा के अलावा किसी और को अमीर बनाता तो अब्दुल्लाह बिन मसऊद को अमीर बनाता। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद बताते हैं कि इस्लाम स्वीकार करने के बाद कभी भी चाशत के समय नहीं सोया।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पेज 114 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत 1990 ई)

अब्दुल्लाह बिन मसऊद अपने बीवी बच्चों से प्रेम रखते थे। घर में दाखिल होते तो खनखारते और ज़ोर से कुछ बोलते ताकि घर के लोग सावधान हो जाएं। आप की पत्नी हज़रत ज़ैनब बयान करती हैं कि एक दिन अब्दुल्लाह ने घर में प्रवेश किया उस समय एक बूढ़ी औरत मुझे तावीज़ पहना रही थी। महिलाओं को आदत होती है कई बार कि तावीज गंडा भी कर लें शायद बरकत पाने के लिए तो उन्हें पता था कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद को यह बात पसंद नहीं है। कहती हैं मैंने उनके डर से उसे अपने पलंग के नीचे छुपा दिया, जहां बैठकर कर रही थी। आप मेरे पास आकर बैठ गए और मेरे गले की ओर देखकर पूछा कि यह धागा कैसा है जो तुम ने गले में डाला हुआ है? मैंने कहा तावीज़ है। उन्होंने उसे तोड़ कर उसी समय फेंक दिया और कहा कि अब्दुल्लाह का परिवार शिर्क से आज़ाद है। फिर अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने कहा कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मैंने सुना है कि तावीज़ गंडे शिर्क में शामिल हैं मैंने कहा यह आप क्या कहते हैं मेरी आंख़ें जोश कर आती थीं तो मैं अमुक यूहूदी के पास तावीज़ लेने जाता करती थी कर रहे हैं। मैंने कहा यह आप क्या कहते हैं? कुई बार मेरी आँखों में परेशानी होती थी, आँखें फूल जाती थीं, पानी निकलता था तो मैं यहूदी से उसका ताबीज़ लेती थी और उसके ताबीज़ से मुझे आराम हो जाता था। तो अब्दुल्लाह बिन मसऊद बोले कि यह सब शैतानी कर्म हैं। तुम्हारे लिए आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह दुआ ही पर्याप्त है और वह दुआ है कि

اَذْهِبِ الْبَأْسَ رَبَّ النَّاسِ اِشْفِ وَاَنْتَ الشَّافِيْ لَا شِفَاءَ اِلَّا شِفَاءُكَ شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا

हे लोगों के परवरदिगार मेरी परेशानी को दूर कर तू शिफा दे केवल तू ही शिफा देने वाला है तेरे शिफा के सिवा कोई शिफा कारगर नहीं। ऐसी चिकित्सा जो किसी बीमारी को न छोड़े।

(सैरुस्सहाब: जिल्द 2 पेज 225 मुद्रित दारुल इशाअत कराची)

अब जो लोग पीरों फ़क़ीरों के दरवाज़ों पर जाते हैं जो लोग सारा दिन भांग और चरस पी रहे होते है, कभी नमाज़ें भी नहीं पढ़ते और उनसे ताबीज गंडा कराते और फिर कहते हैं कि हम स्वस्थ हो गए या हम पर बड़ा फज़ल हो गया और हमें औलाद मिल गई और अमुक हो गया। यह सब बातें उन का जवाब है।

अब्दुल्लाह बिन मसऊद एक बार अपने एक दोस्त अबू उमेर से मिलने गए। संयोग से वह मौजूद नहीं थे तो उन्होंने उनकी पत्नी को सलाम भेजा और पीने के लिए पानी मांगा। घर में पीने का पानी मौजूद नहीं था। उन्होंने एक दासी को किसी पड़ोसी के पास भेजा। उससे पानी लेने गई और देर तक वापस नहीं आई। अबू उमैर की पत्नी उस काम करने वाली दासी को इस बात पर सख्त सुस्त कहा और उस पर लानत भेजी। हज़रत अब्दुल्लाह यह सुनकर प्यासे ही वापस पलट गए। दूसरे दिन अबू उमैर से मुलाकात हुई तो उन्होंने इतनी जल्दी वापस चले जाने की वजह पूछी कि आप पानी पिए बिना चले गए? उन्होंने उत्तर दिया कि तुम्हारी पत्नी ने जब दासी पर लानत भेजी थी तो मुझे आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात याद आ गई कि जिस पर लानत भेजी जाती है अगर वह निर्दोष हो तो अभिशाप भेजने वाले की तरफ वापस आ जाती है। तो मैंने सोचा कि दासी अगर निर्दोष हुई तो बेवजह इस अभिशाप के वापस आने का कारण बनूंगा।

(सैरुस्सहाबा जिल्द 2 पृष्ठ 223 प्रकाशित दारुल इशाअत कराची)

इस लिए बेहतर है कि मैं चला जाऊं और पानी न पीयूं। तो अल्लाह तआला के डर का यह मामला था कि कहीं शंका भी हो कि अल्लाह तआला का क्रोध हो सकता है किसी कारण से तो इस से बचते थे।

अब्दुल्लाह बिन मसऊद पतले शरीर और लंबे कद के थे था, लेकिन कपड़े बहुत अच्छे पहनते थे। सफेद कपड़े पहनते तो इत्र का इस्तेमाल करते। हज़रत तलहा से मरवी है कि आप अपनी इत्र से पहचाने जाते थे।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ116-117 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत 1990 ई)

हज़रत अली बताते हैं कि एक बार आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किसी काम के लिए अब्दुल्लाह बिन मसऊद को एक पेड़ पर चढ़ने का आदेश दिया। सहाबा आप की दुबली और ज़ाहिरा तौर पर कमजोर पिंडलियों को देखकर हंसी मज़ाक करने लगे, बड़ी कमज़ोर दुबले पैर थे, हास्य करने लगे। उस पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि क्यों हँसते हो? अब्दुल्लाह की नेकियों का पलड़ा क़ामत के दिन उहद पहाड़ से भी अधिक वज़न वाला होगा।
(असदुल ग़ाबह जिल्द 3, सफ़ा 385 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद के बाल ऐसे थे जिन्हें वे अपने कानों तक उठाते थे। यह एक रिवायत में है कि आपके बाल गर्दन पर पहुंचे। जब आप नमाज़ पढ़ते हैं, तो वे कानों के पीछे कर लेते थे।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पेज 117 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत 1990)

ज़ैद बिन वहब बताते हैं कि मैं एक दिन हज़रत उमर के पास बैठा हुआ था इतने में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद आए। क्योंकि वे छोटे कद के थे इस लिए दूसरे लोगों के पीछे छुप से गए। उनका कद छोटा था। बैठे रहने के कारण एक लंबे समय तक बैठे या रास्ते में बैठे अन्य लोगों से छुप गए। लगभग छुप गए या सही तरीके से नहीं दिख रहे थे। जब हज़रत उमर ने उसे देखा, मुस्कुराने लगे। तब हज़रत उमर ने आपसे बातें कीं और ज़ोर से हँसना शुरू कर दिया। उस समय अब्दुल्लाह खड़े रहे जब हज़रत उमर बातें कर रहे थे तो हज़रत अब्दुल्लाह खड़े हो गए ताकि छुपे न। और बातें करते रहे। बातें करने के बाद जब हज़रत अब्दुल्लाह वहाँ से चले गए तो उमर आप को जाते हुए देखा और पीछे से देखते रहे यहाँ तक वे ओझल हो गए। फिर उमर ने कहा कि यह व्यक्ति ज्ञान से भरा एक बड़ा बर्तन है।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 3, सफ़ा 386 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत)

इब्ने मसऊद के ज्ञान की अवस्था यानी अब्दुल्लाह बिन मसऊद का मान सम्मान का स्थान का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि जब हज़रत

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

मुआज़ बिन जबल की मृत्यु का समय आया और उनसे अनुरोध किया गया कि हमें कोई नसीहत करें तो उन्होंने कहा कि ज्ञान और ईमान का एक स्थान है जो भी उसे पाने की कोशिश करता है सफल होता है। फिर ज्ञान और ईमान जानने के लिए हज़रत मुआज़ बिन जबल ने जिन चार आलमों के नाम लिए उनमें हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद का नाम भी था।

(अहमद बिन हंबल जिल्द 7 पेज 375 हदीस 22455 मुद्रित आलम अलकुतुब बैरूत 1998 ई)

आं हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद हज़रत उमर ने आप को कूफ़ा वालों की शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए बतौर मुरब्बी भेजा जबकि हज़रत अम्मार बन यासिर को हाकिम बनाकर भेजा। साथ ही कूफ़ा वालों को यह भी लिखा कि यह दोनों आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा में से चुने हुए लोग हैं, बड़े विशेष लोग हैं, बद्र के सहाबा में से हैं आप लोग उनका अनुसरण करो, उनके आदेशों का पालन करो और उनके बातें सुनो, मैं अब्दुल्लाह बिन मसऊद के बारे में अपनी हस्ती से तुम्हें अधिक प्राथमिकता दी है।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 3, सफ़ा 385 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत)

हज़रत उसमान रज़ियल्लाहो अन्हो जब अब्दुल्लाह बिन मसऊद की अंतिम बीमारी थी आप की अयादत के लिए आए और पूछा कि क्या आपको कोई शिकायत है? तो उन्होंने कहा कि शिकायत का मुझ से पूछते हैं मेरे से तो मुझे फिर शिकायत अपने गुनाहों की है कि मैंने इतने गुनाह किए हैं। फिर हज़रत उसमान ने पूछा, कि क्या आपको किसी चीज़ की ज़रूरत है? उन्होंने कहा, मेरे अल्लाह की दया चाहता हूं। हज़रत उसमान ने कहा, मैं आपके लिए कुछ वैद्य सुझाता हूं, कोई डाक्टर ला दूं जो आपका इलाज करे। तब उन्होंने कहा कि चिकित्सक ने मुझे बीमार कर दिया है। अर्थात मैं अल्लाह की खुशी से प्रसन्न हूं, जो हो रहा है। तब हज़रत उसमान ने कहा, क्या मैं आपका वज़ीफा नियुक्त कर दूं? तो मैंने कहा, मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है। हज़रत उसमान ने कहा कि आपकी लड़कियों के काम आ जाएगा। कहने लगे कि आप मेरी लड़कियों के ग़रीब होने की चिंता है जो यह बात की है। फिर उन्होंने कहा, मैंने अपनी बेटियों को हर रात सूरह वाकिया पढ़ने का आदेश दिया है। मैं आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह सुना है कि जो भी हर रोज़ रात को सूरह वाकिया पढ़ लिया करे होगा उसे कभी फाके की नौबत पेश न आएगी।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 3, सफ़ा 386-387 दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत)

तो यह था अल्लाह तआला पर भरोसा और किनाअत की अवस्था इन चमकते हुए सितारों की।

सलमा बिन तमाम कहते हैं कि एक व्यक्ति ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद से मुलाकात की और अपना एक ख़वाब बताते हुए कहने लगा कि मैंने रात आप को सपने में देखा है और यह कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक उच्च व्यासपीठ पर बैठे हैं और आं हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह कह रहे हैं कि हे इब्ने मसऊद मेरे पास आ जाओ मेरे बाद तुम ने बहुत बे-रग़बती साध ली है। अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने पूछा, ख़ुदा की कसम क्या तुम ने यह सपना देखा है? उस व्यक्ति ने हाँ कहा। तब आप ने कहा, क्या तुम मदीना से मेरी नमाज़ जनाज़ा पढ़ने के लिए आए हो?" फिर इस का अर्थ है कि अब मेरा समय निकट है। इसके कुछ समय बाद ही उनकी मृत्यु हो गई।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 3, सफ़ा 386 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत)

लेकिन वफात से पहले हज़रत उसमान को जब उनकी बीमारी का इल्म हुआ तो आप को कूफ़ा से मदीना बलुवा लिया। कूफा के लोगों ने आपको कुफा में रहने के लिए कहा और कहा कि हम भी आप की रक्षा करेंगे। शायद बीमारी न थी लेकिन जैसे ही हज़रत उसमान ने उन्हें बुलाया। हालांकि, जब उस व्यक्ति नेसे सुना तो वह स्वास्थ्य की स्थिति में था। इसके बाद फिर यह घटना हुई कि हज़रत उसमान ने उन्हें कूफ़ा से बलुवा लिया बावजूद इसके कि कूफ़ा के लोग यही चाहते थे कि आप वहीं रुके रहें और यह कहा कि हम आपकी रक्षा करेंगे लेकिन आपने फ़रमाया कि समय के ख़लीफा का आदेश और आज्ञाकारिता मेरे लिए ज़रूरी है। फिर आप यह भी कहा कि निकट भविष्य में कुछ फ़ित्ने होंगे और मैं नहीं चाहता कि फ़ितने शुरू करने वाला मैं हूँ। यह कहकर ख़लीफा के पास चले आए। आप की वफात 32 हिजरी में मदीना में हुई। हज़रत उसमान ने नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई और उन्हें जन्नतुल बकीअ में दफन किया। मृत्यु के समय आप की आयु 60 साल से अधिक उम्र की थी।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 3, सफ़ा 387 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत)

एक और रिवायत के अनुसार मृत्यु के समय उन की उम्र 70 साल से कुछ अधिक थी। (तब्कातुल कुबरा अनुवाद अब्दुल्लाह अलअमादी भाग तृतीय पेज 230 मुद्रित परिष्कृत अकादमी कराची)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद की मृत्यु पर हज़रत अबू मूसा ने हज़रत अबु मसऊद से कहा कि क्या आप यह समझते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने अपने बाद ऐसे गुणों वाला और कोई व्यक्ति पीछे छोड़ा है? हज़रत अबु मसऊद कहने लगे कि बात यह है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के यहाँ जब हमें जाने की अनुमति नहीं होती तब हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद को प्रवेश की अनुमति मिलती थी। और जब हम आप की मज्लिस से ग़ायब होते तब हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद को सेवा तौफ़ीक़ पाते और आप की सुहबतों से लाभान्वित होते तो यह कैसे हो सकता है कि कोई व्यक्ति उनके गुणों वाला हो।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पेज 119 मुद्रित दारुलकुतब अल्इल्मिया बैरूत 1990)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद सुन्नत नबवी पर बहुत प्रतिबद्ध थे। एक बार हज़रत आयशा से पूछा गया कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दो सहाबा में से एक सहाबी रोज़ा खोलने में जल्दी करता है यानी सूर्यास्त के साथ ही इफ्तार करते हैं और नमाज़ भी सूर्यास्त के तुरंत बाद जल्दी अदा करते हैं जबकि अन्य यह दोनों काम तुलनात्मक रूप से कुछ देर में करते हैं। हज़रत आयशा ने पूछा कि जल्दी कौन करता है तो उन्हें बताया गया कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद ऐसा करते हैं तो हज़रत आयशा ने इस पर कहा कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का भी यही दस्तूर था जो कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद करते हैं, आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि भी वही काम किया गया था।

(अहमद बिन हंबल जिल्द 8 पृष्ठ 51 हदीस 24716 मुद्रित आलमुल कुतुब बैरूत 1998 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद के बारे में और रिवायतें और घटनों भी हैं जो इंशा अल्लाह आगामी बयान करूँगा। अल्लाह तआला हमें उज्ज्वल सितारों के तरीकों और रास्तों पर चलने की तौफीक़ प्रदान करे।

☆ ☆ ☆
☆ ☆
☆


## हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

## ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

पृष्ठ 2 का शेष

दो कार्यालय और एम.टी.ए के सुन्दर स्टूडियो हैं। मस्जिद पर दो गुंबद हैं और मिनारतुल मसीह की शैली का मिनारा भी है। यह मस्जिद चूंकि ऊंचाई पर स्थित है, इसलिए बहुत दूर से दिखाई देती है।

**दिनांक 18 मई 2016 ई**

19 मई 2016 ई दिनांक गुरुवार सुबह पौने चार बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ के अदा करने के बाद, हुज़ूर अनवर अपने निवास स्थान पर पधारे।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने दफतर की डाक, ख़तों और रिपोर्टों को देखा और इन ख़तों तथा रिपोर्टों पर अपने हाथ से हिदायतें दीं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ दफतर के कामों में व्यस्त रहे।

दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद में तशरीफ लाकर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों को अदा करने के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ अपने आवासीय क्षेत्र में पधारे।

शाम के समय हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ दफतर के मामलों को करने में व्यस्त थे।

**पारिवारिक मुलाकातें:**

कार्यक्रम के मुताबिक, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय पधारे और परिवार की मुलाकातों का कार्यक्रम शुरू किया। इस शाम के इस सत्र में, 28 परिवारों के 94 सदस्यों को अपने प्रिय आक़ा से मिलने का मौका मिला। परिवार की मुलाकात गोथेनबर्ग जमाअत से थी। एक परिवार स्टॉकहाम से 483 किमी की दूरी तय कर के पहुंची थी।

इन सभी परिवारों ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनाने का मौका मिला।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाली छात्राओं को कलम तथा छोटे बच्चों को चाकलेट प्रदान कीं

मुलाकातों का यह कार्यक्रम नौ बज कर दस मिनट तक जारी रहा। इसके बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ अपने निवासीय भाग में पधारे। नौ बज कर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद नासिर पढ़ा कर नमाज़ मग़रिब व इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों के अदा करने के बाद, हुज़ूर अनवर अपने निवास स्थान पर पधारे।

**रेडियो, टेलीविज़न और अख़बारों में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यात्रा की कवरेज**

अल्लाह तआला की कृपा से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की स्वीडन की यात्रा को घरेलू और क्षेत्रीय प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में कवरेज हो रही है। राष्ट्रीय टीवी, विभिन्न रेडियो चैनलों और अख़बारों में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के इनट्रवियू प्रसारित और प्रकाशित हो रहे हैं और मस्जिद महमूद माल्मो के उद्घाटन के हवाले से लेख लिखे जार रहे हैं। इसी प्रकार, ऑनलाइन सोशल मीडिया के माध्यम से कवरेज व्यापक रूप से फैल रही है।

* स्वीडिश राष्ट्रीय टेलीविजन (Sveriges टीवी Sydnytt) ने 11 मई के प्रसारण में कवरेज दी, यह टीवी चैनल स्वीडिश राष्ट्रीय चैनल है। देश के दक्षिण क्षेत्र के स्थानीय समाचार वाली एक टीम हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का इनट्रवियू लेने के लिए दिनांक 11 मई को मस्जिद महमूद माल्मो में आई। इस दिन, यह समाचार प्रांतीय टेलीविज़न शो में प्रकाशित हुआ था। इसमें, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ मस्जिद की सुन्दरता के बारे में एक प्रश्न का उत्तर दे रहा है, और यह भी उम्मीद व्यक्त कर रहे हैं कि क्षेत्र के लोग भी इसे पसंद करेंगे। साथ ही साथ कहा गया कि हमारा लक्ष्य प्रेम सब से घृणा किसी से नहीं है, और इस्लाम एक शांतिपूर्ण और सुरक्षित शांति है। इस क्षेत्र की कुल आबादी 3.1 मिलियन है। जिन तक यह ख़बर पहुंची वेबसाइट पर एक लेख भी लिखा गया है।

"इन दिनों माल्मो में एक नई मस्जिद का उद्घाटन किया जा रहा है। इसका निर्माण और खर्चा मुस्लिम समुदाय अहमदिया कर रही है, जो सभी प्रकार के अतिवाद की निंदा करती है।

हमारा लक्ष्य मुहब्बत सब से नफरत किसी से नहीं हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब का कहना है जो अहमदिया जमाअत के सबसे बड़े आध्यात्मिक नेता हैं और आजकल मस्जिद के उद्घाटन के लिए सफर पर हैं।

कई लोगों ने इस मस्जिद को देखा है जबकि वे ड्राईव करते हुए येट्रे रिंगवेगन रोड से गुज़रते हैं।

उसका नाम मस्जिद महमूद है, जिसका नाम जमाअत के दूसरे ख़लीफा के नाम पर रखा गया है। उन्होंने बुधवार को मीडिया को आमंत्रित किया था। और जमाअत से भी कई लोग आ रहे थे। वसीम अहमद साजिद यहां अपने परिवार के साथ लॉयड से आ रहे हैं। यहां आने के लिए यह बहुत सम्मान का विषय है।

इसी तरह फरीद असोनी निलसन (स्वीडन की पहली अहमदी महिला) लॉयड से अपने आध्यात्मिक ख़लीफा को मिलने के लिए आई है। आज यहां आने का हमारा लक्ष्य हुज़ूर से मिलना यह मेरे लिए बहु ख़ुशी की बात है यद्यपि मुझे लंदन में एक बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

माल्मो में जमाअत अहमदिया के 300 लोग हैं। स्वीडन में हज़ार और दुनिया भर में लाखों में हैं।

यह एक सुन्नी मुस्लिम संप्रदाय है जिस की नींव पंजाब, हिंदुस्तान में डाली गई थी। अन्य मुस्लिमों की नजर में, उनके नबुव्वत के कारण विवाद है। कई देशों में उन का विरोध होता है पाकिस्तान में उन्हें अपने आप को मुसलमान कहने की आज्ञा नहीं है।

यह मस्जिद देश में दूसरी अहमदी मस्जिद है, लेकिन यह सबसे बड़ी है।

इसकी इमारत बहुत सुन्दर है और मुझे उम्मीद है कि यहां रहने वाले लोग इसे पसंद करेंगे। जमाअत अहमदिया के सब से बड़े लीडर मिर्ज़ा मसरूर अहमद का कहना है।

मस्जिद सभी के लिए खुली है (जमाअत का) मिशन प्यार और शांति है, वह कहते हैं, और यह जमाअत सभी प्रकार के अतिवाद की निंदा करती है। यहां हर किसी को आने की अनुमति होगी। "यह मेरे निकट बहुलवाद का एक स्थान है। हम किसी के लिए अपने दरवाज़े बन्द नहीं करते। जमाअत माल्मो के प्रवक्ता करीम लून का ब्यान

अज़ान की आवाज़ मस्जिद में एक ज़ोरदार स्पीकर के द्वारा केवल मस्जिद के अन्दर गूंजती है। यहां एक स्पोर्ट्स हॉल और कई प्रकार के कार्यालय भी हैं।

प्रत्येक सप्ताह जुम्अ: की नमाज़ और ख़ुत्बा स्वीडिश और उर्दू में पेश किए जाते हैं। खर्च और निर्माण की लागत जमाअत ख़ुद है।

*** अखबार Skanska Dagbladet ने अपनी 11 मई के प्रकाशन में लिखा:**

(यह अख़बार दैनिक है और हर रोज़ 75 हज़ार पाठकों तक पहुँचता है। इसके अलावा ऑनलाइन साइट हर सप्ताह एक लाख 25 हज़ार दर्शक विज़िट करते हैं।)

चरमपंथियों को दूसरा अवसर देना चाहिए।

इस्लाम में कोई भी इस प्रकार की बात नहीं जो हिंसा का समर्थन करती हो। मिर्ज़ा मसूरूर अहमद का कहना है जोकि जमाअत अहमिदया के प्रमुख हैं, जिनके दुनिया भर में कई मिलियन सदस्य हैं। लेकिन उन का कहना है कि लौटने वाले आई एस ए के सदस्यों को एक दूसरा अवसर मिलना चाहिए।

जमाअत अहमिदया का सिद्धांत मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं है, और इस्लाम के भीतर यह एक इस प्रकार की आवाज़ है जिसे कई लोग सुनते हैं। जमाअत अहमिदया के निकट, आक्रामक जिहाद का कुरआन कि शिक्षा में कोई उल्लेख नहीं है।

मिर्ज़ा मसूर अहमद ने आई एस आई के वापस लौटने वाले सिपाहियों के बारे में अपनी बात रखते हुए कहा है। ब्रिटिश समाचार पत्र ने ऑब्जर्वर को बताया कि ब्रिटिश सरकार को इन युवाओं को सुधारने का अवसर देना चाहिए। ये लोग निराश हैं, और मैं स्वयं इन की निराशा को अनुभव करता हूं, उन्हें एक-दूसरे अवसर का अधिकार है। इन लोगों की निगरानी की ज़रूरत है। और उन्हें शिक्षा भी दी जानी चाहिए और उन्हें अपने देश के प्रति निष्ठा की भावना पैदा करनी चाहिए। उनका समाचार पत्र स्कांस्का डगलब्लेट से कहना है। उन्हें जेल में रखना ज़रूरी नहीं।

लेकिन स्वीडन में आतंकवाद का एक कानून है?

बेशक, अगर यह साबित हो जाए कि उन्होंने असुविधा पैदा की है इस अवस्था में कानून लागू किया जाना चाहिए।

मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़ुद बड़े सुरक्षा दस्ते के साथ यात्रा करते हैं, मगर उनका threat-level के बारे में कहना है कि हम सभी आतंकवादी हमलों के कारण एक uncertain दुनिया में रहते हैं।

ख़लीफतुल मसीह पाकिस्तान से हैं जहां उन्हें अन्य मुस्लिमों की तरफ से विरोध का सामना करना पड़ा है।

ख़लीफा ने कहा कि मेरे लिए वहां जाने में असुविधाएं हैं और मैं वहां जेल में भी रह चुका हूं। अत: जब मैं अहमदिया जमाअत का मुखिया बना तो मैंने देश छोड़ने का फैसला किया। मुझे पाकिस्तान में ख़ुद की बात रखने की अनुमति नहीं है।

*** समाचार पत्र 24 माल्मो ने अपने 11 मई के संस्करण में लिखा:**

मुस्लिम पोप मस्जिद का उद्घाटन करेंगे: महान व्यक्तित्व।

निर्माण की अनुमति के 16 साल बाद, अब मस्जिद महमूद एलिज़ाल का उद्घाटन किया जा रहा है। शुक्रवार के उद्घाटन समारोह के उद्घाटन के अवसर पर जमाअत के विश्व नेता स्वंय शामिल होंगे।

65 वर्षीय ख़लीफा मिर्ज़ा मसरूर अहमद विश्व जमाअत अहमदिया के सबसे बड़े नेता हैं, जो कि एक इस्लामी जमाअत है जिस के दुनिया भर में 10 लाख के क़रीब लोग हैं। इससे पहले वह यूरोपियन संसद और ब्रिटिश Underhouse को भी संबोधित कर चुके हैं। इसके अलावा, अमेरिकी कांग्रेस के कई सदस्यों को भी संबोधित किया है। अब वे मस्जिद महमूद के ऐतिहासिक उद्घाटन के लिए माल्मो आए हैं।

ये एक महान व्यक्तित्व हैं और यह यात्रा एक महान सम्मान है। 2003 ई में जब आप ख़लीफा बने हैं आप ने दुनिया भर में यात्रा करके इस्लाम में शांति और सहिष्णुता के बारे में संबोधन किया है। अब स्वीडन की बारी है।

मिर्ज़ा मसरूर अहमद सभी प्रकार के अतिवाद की गंभीरता की निंदा करते हैं। और आपका यह कहना है कि अपराध को रोकने के लिए पुलिस को और ताकत देनी चाहिए। अमेरिकी समाचार पत्र वाल स्ट्रीट जर्नल ने आपको "मुस्लिम पॉप" का उपनाम दिया है। इस विशेष कारण से जो आप को जमाअत का आध्यात्मिक नेता होने के कारण प्राप्त है।

जमाअत अहमदिया स्वीडन, जिसके पूरे देश में एक हज़ार माल्मो में 200 लोग हैं, इस मस्जिद का निर्माण एक बड़ी सफलता है। जमाअत के लोगों द्वारा इसका व्यय सहन किया जाता है। और इसकी योजना साल 2000 ई से शुरू हुई है। मस्जिद पूरी होने तक उठाए गए कदम आसान नहीं थे।

ऐसे कई लोग हैं जो इस इमारत को मस्जिद के रूप में नहीं बुलाएंगे क्योंकि वे हमें 'असली' मुसलमान नहीं समझते हैं। फिर आम तौर पर स्वीडन में विभिन्न दाएं पंथ के चरमपंथियों द्वारा मस्जिदों के ख़िलाफ खतरा होता है, और हम भी सुरक्षित नहीं हैं।

*** समाचार पत्र सिडसेवनस्कैन ने 11 मई, 2016 को अपने प्रकाशन में लिखा था कि:**

बिल्डिंग की समीक्षा के लिए माल्मो में ख़लीफा आए हुए हैं।

शनिवार को जमाअत अहमदिया की नई मस्जिद का उद्घाटन किया जा रहा है। इसके लिए, ख़लीफा, मिर्ज़ा मसूर अहमद स्वंय पधारे हैं।

ख़लीफा मिर्ज़ा मसरूर अहमद जगसरो में स्थित मस्जिद का उद्घाटन करने के लिए माल्मो पहुंचे हैं। जमाअत अहमदिया की नींव 1889 ई में भारत में रखी गई थी और 207 देशों में 10 मिलियन से अधिक लोग हैं।

24 मीटर इमारत के का निर्माण का खर्चा 49 मिलियन है। यह राशि जमाअत अहमदिया स्वीडन के सदस्यों द्वारा एकत्र की गई है। उद्घाटन शनिवार को होगा, लेकिन मंगलवार से, जमाअत के सबसे बड़े नेता मिर्ज़ा मसरूर अहमद माल्मो में कार्यक्रमों के लिए आ गए हैं।

ख़लीफतुल मसीह ने कहा: जब मैं पहली बार यहां आया था, तो यह एक खाली क्षेत्र था। जब मैं यहाँ हूं, तो यहां एक सुन्दर इमारत है। एक धार्मिक व्यक्ति के लिए ऐसी जगह का विचार एक महान आन्नद है, जहां मुसलमान इबादत के लिए इकट्ठा किया जाता है।

अहमदिया जमाअत ख़ुद को एक शांतिपूर्ण जमाअत के रूप में प्रस्तुत करती है। लेकिन महिलाओं और समलैंगिकता पर उनके विचार रूढ़िवादी हैं। ख़लीफा के साथ एक लंबा इनट्रविय़ू शुक्रवार को प्रकाशित किया जाएगा।

* सवीरगस रेडियो P1 Manniskor och tro और सवीरगस रेडियो एकूत Sveriges Radio Ekot ने अपने 12 मई 2016 ई के प्रसारण में बताया:

(रेडियो रिपोर्टर के संबंध दो ऐसे रेडियो कार्यक्रम थे जो कि सारे देश में प्रसारित किए जाते हैं। Mannikor och tro नामक कार्यक्रम धार्मिक विषयों से संबंधित है। इसमें जमाअत की चर्चा हुज़ूर अनवर के दौरे के संदर्भ से की गई। इस रिपोर्ट की समय 13 मिनट था। इस कार्यक्रम में जमाअत की आस्थाओं का विस्तार से ज़िक्र हुआ और विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर ने भी इस पर प्रकाश डाला। हुज़ूर अनवर के इनट्रविय़ू का कुछ हिस्सा भी सुनाया गया। इसी तरह नेशनल समाचार कार्यक्रम Ekot ने भी एक ख़बर दी है।)

जमाअत अहमिदया की नई मस्जिद का उद्घाटन हो गया ।

हमारा लक्ष्य मुहब्बत हर किसी से नफरत किसी से नहीं है।

आज जमाअत अहमदिया की स्वीडन में दूसरी मस्जिद , माल्मो मस्जिद का उद्घाटन हुआ।

अहमदिया जमाअत स्वीडन में एक छोटा सा समूह है, जिसके एक हज़ार सदस्य हैं और दुनिया भर के मुस्लिमों में अल्पसंख्यक ही हैं।

जमाअत अहमदिया की धारणा मोक्ष पर आधारित है। उनके निकट हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद नाजी (मुक्ति प्राप्त) संप्रदाय के संस्थापक थे। इस वजह से वे विरोध क सामना कर रहे हैं। यही कारण है कि आज उनकी सुरक्षा व्यवस्था बहुत महत्त्वपूर्ण है। मेंबर पर खड़े ख़लीफा मिर्ज़ा मसरूर अहमद जुम्अ: का ख़ुत्बा दे रहे थे और यह उद्घाटन टीवी पर दुनिया के अक्सर भागों में प्रसारित किया गया।

*** सिड्सवेन्स्सान (सिडनी स्वेंसेनस्टीन) ने अपने 13 मई के प्रकाशन में लिखा कि**

(यह पेपर दक्षिण स्वीडन में सबसे बड़ा समाचार पत्र है। इस के प्रतिदिन एक लाख से अधिक नुस्ख़े छुपते हैं, साथ ही साथ अधिकांश लोग इसे पढ़ते भी हैं।)

पवित्र ख़लीफा का चरमपंथी और समलैंगिकों के बारे में स्पष्ट बयान

207 देशों में, वह कई मिलियन मुसलमानों के प्रमुख हैं। हमारी मुलाकात अहमदिया जमाअत के ख़लीफा, मिर्ज़ा मसूर अहमद के साथ हुई थी, और यह विषय जिहाद, शांति और हाथों के मिलाने के बारे में था। साथ ही इर्तदाद के आरोप और मुस्लिम उम्मत तथा समलैंगिकों के बारे में था। हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद को एक मुस्लिम पोप भी कहा जाता है। इन के निकट इस उपनाम में कोई असुविधा नहीं।

गुंबद सूर्य की किरणों में चमक रहा है। वहां अन्दर मस्जिद महमूद की आधुनिक इमारत में जो क्षेत्र जेगर्सो के पूर्व में स्थित एक मस्जिद है, जो एक सफेद पगड़ी पहने हुए सुरक्षा कर्मचारियों के बीच अपने लोगों के मध्य में बैठे हुए थे। कुछ लोग फिल्म बना रहे हैं। बाकी कुछ हर शब्द को लिखे रहे हैं। हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद, जो दुनिया भर में मुस्लिम प्रमुखों में सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं, अक्सर अंतरराष्ट्रीय प्रेस उन्हें मुसलमानों के पोप के रूप में जाना जाता है।

इस सम्बोधन के बारे में आप की क्या राय है?

ख़लीफा ने जवाब दिया कि आप मुझे यह कहलाना चाहते हैं तो ठीक है। अगर मैं अपनी परिभाषा में कैथोलिक पोप को ख़लीफा कह सकता हूं मिर्ज़ा मसूरूर अहमद ने हंस कर जवाब दिया।

जब से मिर्ज़ा मसरूर अहमद ने 2003 में अहमदिया जमाअत का नेतृत्व संभाला था, तब से आपने सारी दुनिया का दौरा किया है और शांति स्थापित करने के लिए विश्व के नेताओं को आमंत्रित किया है।

आपने दुनिया के प्रमुखों को पत्र लिखे हैं और तीसरे विश्व युद्ध के बारे में सूचित किया है। ऐसा करने से आपका लक्ष्य क्या है?

ख़लीफा ने कहा मेरे लिए विश्व की शान्ति चिन्ता का विषय है और इस के बारे में मैं लम्बे समय से बात कर रहा हूं। यही कारण है कि मैंने अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, चीन, सऊदी अरब, ईरान और पोप समेत विभिन्न देशों के प्रमुखों को लिखा है। ऐसा करने का उद्देश्य मेरे लिए था कि हम एकजुट हूं और दुनिया में शांति बनाने की कोशिश करें ।

क्या आपके पास यह समाधान है?

ख़लीफा ने कहा: इस का समाधान यह है कि अपने निर्माता को पहचाना जाए और एक-दूसरे का सम्मान किया जाए। जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने अपने आगमन के दो लक्ष्य निर्धारित किए हैं। एक मनुष्य को अपने निर्माता के करीब लाया जाए, और दूसरा मानवता को एक-दूसरे के अधिकार दिए जाने का इहसास

दिलाया जाए।

अधिकारों की मांग करने के बजाय, दूसरों को अधिकार देने चाहिए। यदि सब का बर्ताव इस प्रकार हो जाए तो अमन स्थापित हो जाएगा।

आपको नेताओं की तरफ से कैसी प्रतिक्रिया मिली?

ख़लीफा ने कहा: मुझे केवल कैनण्डा और ब्रिटेन के प्रमुखों से जवाब मिले हैं। उन्होंने लिखा कि हम दुनिया में अमन स्थापित करने के लिए कोशिश कर रहे हैं और परमाणु शस्त्रागार को खत्म करने की कोशिश कर रहे हैं। यह एक राजनीतिक जवाब था। मुझे नहीं पता कि यह कभी किया भी जाएगा या नहीं।

ख़लीफा का कहना है कि विश्व शांति को सब से बड़ा खतरा चरमपंथी इस्लामवाद से है।

आप के विचार में क्या कारण है कि इतने नौजवान यूरोप से आई एस आई एस से मिलने के लिए जाते हैं?

ख़लीफा ने जवाब दिया, कई कारण हैं। 2008 ई में, आर्थिक संकट के बाद युवाओं में बेरोजगारी बढ़ी है। केवल यू.के में ही हड़ारों नौकरियां समाप्त हो गई हैं। इस निराशा में परिणाम में परेशानी पैदा होती है। आई एस आई एलोगों को $ 6,000 या 10,000 के वादे पर नौकरी में भर्ती करती है। यह एक ऐसे व्यक्ति के लिए भारी मात्रा रकम है जो आम तौर पर केवल $ 100 कमाता है। ऐसी कई अन्य बातें हैं जो उन्हें आकर्षित करती हैं, कि तुम शहीद हो कर मर सकते हो तो जन्नत में जाओगे आदि। हालांकि, यह इस्लामी शिक्षा नहीं है। ये नेता लोगों को चरम पंथी बनाते हैं और अपनी शिक्षाओं के पीछे चलाते हैं। कुरआन करीम की ग़लत व्याख्या कर के ऐसा करते हैं।

ख़लीफा के निकट यह बात महत्त्वपूर्ण है कि प्रमुख मुद्दे जैसे चरमपंथ और महिला से हाथ मिलाने से हाथ मिलाने से इंकारकरना कि यह छीक है या नहीं के मध्य अन्तर करना ज़रूरी है। जब हम में उन से ग्रीन पार्टी के राजनेताओं का ज़िक्र किया जिन्होंने महिला पत्रकार से हाथ मिलाने से इंकार कर दिया, तो ख़लीफा ने हंस का जवाब दिया:

यह एक मामूली बात है जिसे इस तरह से बढ़ा चढ़ा कर पेश किया गया है यह मेरी समझ से बाहर है। यदि कोई पुरुष किसी महिला से हाथ न मिलाए, तो क्या देश विकास करना बंद कर देता है? ये व्यक्तिगत मामले हैं। राजनेता और नेता क्यों इस में हस्तक्षेप करते हैं? सैकड़ों लोग भूखे मर जाते हैं। यहां, स्वीडन में, कुछ लोग एक बहुत ही आर्थिक स्थिति में रहते हैं। अवसर और नौकरियां प्रदान करने के लिए कोशिश नहीं की जाती कि उन्हें अवसर प्रदान किए जाएं।

**क्या आप ख़ुद किसी महिला से हाथ मिलाने के लिए तैय्यार हैं?**

ख़लीफा ने कहा: मैं इस प्रकार नहीं करूँगा। क्योंकि मैं एक धार्मिक नेता हूं। और मुझे अपनी धार्मिक शिक्षाओं और प्रोटोकॉल पर चलना आवश्यक है है। दुनिया में ऐसे कई धर्म हैं जिन में हाथ मिलाया नहीं जाता। इन में सलाम करने के अपने अपने तरीके हैं।

अगर मैं कानून का सम्मान करता हूं, अगर मैं अपने देश से प्यार करता हूं, अगर मैं देश को समृद्ध बनाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा हूं तो मुझ पर आरोप नहीं लगाया जा सकता कि मैं समाज को एकीकृत करने की कोशिश नहीं कर रहा हूं। केवल हाथ मिलना या पीने से मनुष्य अपने देश के प्रति वफादार नहीं हो सकता है।

**क्या आप कट्टरपंथी इस्लाम के सवालों से उकता गए हैं?**

ख़लीफा ने कहा: कट्टरतावाद एक महत्त्वपूर्ण समस्या है। इस का सम्बन्ध विश्व शान्ति से है। यदि एक स्वीडिश चरमपंथी विचारों का मानने वाला बनता है, तो वह दुनिया के सभी देशों के लिए खतरा है। शहर ब्रुसेल्स में एक स्वीडिश भी गिरफ्तार हुआ था ना? वह वहां विध्वंस के लिए गया हुआ था। यदि माल्मो शहर का एक आदमी बन गया है, तो केवल माल्मो के लिए एक खतरा है बल्कि दुनिया के सभी देशों के लिए खतरा है। यह एक बड़ी समस्या है जिसे हाथ मिलाने से कोई सम्बन्ध नहीं है।

इन्हें (ख़लीफा) को ख़ुद भी बहिष्कार और अन्याय का सामना है। पाकिस्तान के एक कानून के अनुसार, जमाअत के लोगों को मुसलमान के रूप में ख़ुद को कहने की अनुमति नहीं है। यही कारण है कि अन्य मुस्लिम संगठनों ने भी अहमदिया जमाअत पर इतरदाद का आरोप लगाया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जमाअत का कहना है कि मसीह दुनिया में आ चुका है। उनका नाम मिर्ज़ा गुलाम अहमद था और 1889 ई में उन्होंने ख़ुदा तआला का मामूर तथा मुरसल होने का दावा किया था।

हमारे और अन्य मुस्लिम संप्रदायों के बीच मतभेद का यह मुख्य कारण है। मिर्ज़ा मसरूर अहमद कहते हैं।

बाइबिल में कुरआन से अधिक संलैगिकता का उल्लेख किया गया है। यदि आप एक असली ईसाई धर्म के मानने वाले हैं तो आप को यह बात निराशा करेगी। बाइबल के निकट, बुरे कर्मों के कारण उन्हें दंडित किया गया था, यदि अब आपका विश्वास ईश्वर और बाईबल की सामग्री पर है, तो फिर अप क्यों दंड नहीं दिया जा सकता है?

**क्या समलैंगिक आपकी मस्जिद में आ सकता है?**

ख़लीफा ने कहा: यदि कोई व्यक्ति समलैंगिक है, तो क्या इस की घोषणा करना आवश्यक है? अगर कोई इस प्रकार करे तो बेशक करे मस्जिद में आ सकता है, वास्तव में, हम इसे रोक नहीं पाएंगे। लेकिन प्रेम और करुणा के कारण, मेरे विश्वास के अनुसार, और ईसाई धर्म के वास्तविक शिक्षा के अनुसार, ऐसा व्यक्ति ख़ुदा तआला के हाथों बर्बाद और सज़ावार ठहरता है। मैं उसे कहता हूं कि वह अपने आप को बदलने की कोशिश करे।

कई मनोचिकित्सकों और डॉक्टरों का कहना है कि यह एक मानसिक बीमारी है जिसका इलाज किया जा सकता है। ख़लीफा कहते हैं, और उनके निकट उन्होंने कई मुस्लिम पुरुषों से मुलाकात की है जिन्होंने समलैंगिकता से उपचार किया है, और बाद में अपने विवाहित जीवन में शादी कर ली है।

कुरआन का पालन करना आपका कर्तव्य है, लेकिन धर्म को नवीनीकृत और संशोधित करने का आपका कर्तव्य नहीं है?

ख़लीफा ने कहा: मेरे निकट धर्म का मतलब यह है कि इसकी शिक्षाओं पर अनुकरण किया जाए न कि लोगों के रीति-रिवाजों या विचारों का पालन करना चाहिए। सभी नबियों का आविर्भाव आध्यात्मिक गिरावट के समय होता है। यही अब हो रहा है। हमारी प्राथमिकताएं दुनिया की ओर बढ़ रही हैं। धर्म और मज़हब अंधेरे में डूब रहा है। मुझे अपने दिल में सहानुभूति है और मैं किसी की भी निंदा नहीं करता हूं। अगर मुझे कोई चीज़ नापसंद है तो मैं कर्म है न कि कोई व्यक्ति। चाहे कोई व्यक्ति हत्यारा हो या चोर हो। मैं कर्म से नफरत करता हूं और किसी भी व्यक्ति से नहीं। मैं उसके लिए दुआ करता हूं ताकि वह बदल सके और पश्चाताप कर सके। यह मेरा धर्म है।

*** रेडियो चैनल माल्मो व हाऊस P4 Malmohus ने अपने 13 मई के प्रसारण में बताया:**

(यह रेडियो चैनल है जो कि माल्मो और उसके उपनगरों में प्रसारित होता है। साथ ही ऑनलाइन भी ख़बर के साथ निबन्ध भी प्रिंट छापता है। हुज़ूर अनवर की यात्रा और मस्जिद के उद्घाटन को लेकर खबर प्रसारित की गई जिसका पाठ निम्नलिखित है)

हमारा लक्ष्य मुहब्बत सबसे नफरत किसी से नहीं आज जमाअत अहमदिया ने स्वीडन में अपनी दूसरी मस्जिद, मस्जिद महमूद माल्मो का उद्घाटन किया। जमाअत अहमदिया स्वीडन में एक छोटा सा संप्रदाय है, जिसमें लगभग एक हज़ार लोग और मुस्लिमों की दुनिया में अल्पसंख्यक हैं। अहमदियों के निकट उनके संस्थापक मिर्ज़ा गुलाम अहमद मुक्ति प्राप्त संप्रदाय के संस्थापक हैं। इस वजह से, इस संप्रदाय का विरोध किया जाता है।

मैंम्बर पर ख़लीफा मसरूर खड़े थे जिन्होंने जुम्अ: की नमाज़ पढ़ाई और यह उद्घाटन टीवी के माध्यम से दुनिया के अधिकांश हिस्सों में प्रसारित हुआ।

*** ऑनलाइन समाचार पत्र माल्मो 24 ने अपने 14 मई 2016 के प्रकाशन में लिखा था:**

दिल प्रिय ख़लीफा ने माल्मो का दौरा किया। शीघ्र वैश्विक युद्ध का सामना करना पड़ सकता है।

16 वर्षों के बाद, मस्जिद महमूद स्थापित एलिसेडल का उद्घाटन किया गया। अहमदियों के विश्वव्यापी नेता ख़लीफा मिर्ज़ा मसरूर अहमद पर चर्चा करते हुए माल्मा 24 ने इस अवसर से लाभान्वित किया।

नई मस्जिद महमूद में हमारा स्वागत भारी सुरक्षा दल ने किया, जबकि हम शुक्रवार दोपहर यहां पहुंचे। हर जगह पोशाक में लोग हेडफोन लगाए हुए थे। और हमें अपने दो दोस्तों के साथ संपर्क करने के बाद अंदर जाने की अनुमति मिलती है। पहला ऐतिहासिक शुक्रवार अब खत्म हो गया और अब हमें उस कमरे में ले जाया गया है, जहां अहमदियों के सबसे बड़े प्रमुख आदरणीय ख़लीफा मसरूर अहमद पधारे हुए थे।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 25 October 2018 Issue No. 43

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

ख़लीफा का जन्म पाकिस्तान में हुआ लेकिन कई वर्षों से लन्दन में रहते हैं। उद्घाटन से कुछ दिन पहले, माल्मो आए हैं और इस शहर का दृश्य उन्हें पसंद आया है।

मसरूर अहमद ने कहा: यह एक अच्छी जगह है, और मुझे बाहर निकल कर अपनी जमाअत के लोगों से मिलना पसंद है। मुझे नहीं लगता था कि बहुत से लोग बाहर से यहां आएंगे।

और वास्तव में लोगों की संख्या अधिक थी। भीतर के बड़े नमाज़ों के हॉल अपर्याप्त हो गए थे जबकि सारे उत्तरी यूरोप से आए हुए लोग यहाँ माल्मो में उद्घाटन के लिए पहुंचे हैं। 1200 नमाज़ियों में से कुछ को एक अस्थायी नमाज़ घर ले जाया गया, जो आम तौर पर एक मस्जिद की पार्किंग है।

स्वीडन में एक हज़ार लोग रह रहे हैं। जमाअत की देश में दो बड़ी मस्जिदें हैं। (जिनमें से पहली मस्जिद 1975 ई में बनी थी और यह गोथनबर्ग में स्थित है।)

मिर्ज़ा मसरूर अहमद ने कहा: हमारे विश्वास के अनुसार मनुष्य का सर्वोच्च कर्तव्य अपने निर्माता की इबादत करना है और इस लिए एक जगह का होना यह ज़रूरी है स्थानीय जमाअत की कुरबानी से कारण मस्जिद निर्माण संभव हो गया है। इस प्रकार की एक मस्जिद लाइवियो में भी बनेगी।

2003 में अपने चयन के बाद, मिर्ज़ा मसरूर अहमद ने सारी दुनिया का दौरा किया और विश्व के बड़े नेताओं से मुलाकात की। आप 10 मिलियन से अधिक लोगों के नेता हैं। आपने यूरोपीय संसद और ब्रिटिश संसद को संबोधित किया है। और यात्रा के बाद, माल्मो स्टॉकहोम जा रहा है जहां संसद के विशेष सदस्यों से चर्चा की जाएगी। आप धार्मिक उग्रवाद की निंदा करते हैं, जो आप के निकट दुनिया भर बढ़ता खतरा बन रहा है।

ख़लीफा ने कहा: जमाअत अहमदिया में हमारा लक्ष्य 'मुहब्बत सब के लिए घृणा किसी से नहीं है। आज के दिन की वैश्विक स्थितियों को ध्यान में रखते हुए, मैंने इन मुद्दों को बहुत महत्त्व दिया है यदि विश्व के नेता इस स्थिति को नियंत्रण में नहीं लेते हैं, तो हमें वैश्विक युद्ध का सामना करना पड़ेगा। यह देखना होगा कि क्यों सारे यूरोपीय चरमपंथी विचारों के लोग इतने आई एस आई और अन्य आतंकवादी संगठनों के समर्थक बन गए हैं।

2008 ई के आर्थिक संकट के बाद लाखों लोग को रोज़गार नष्ट हो गए थे। अगर उन लोगों को उचित रोज़गार दिया गया, तो मुझे लगता है कि बड़ी संख्या में कट्टरपंथी विचारों को युवा लोगों को कम किया जा सकता है।

उनके निकट स्वीडन भी किसी सीमा तक शरणार्थियों के बारे में नीति में असमर्थ रहा है। ख़लीफा ने कहा: दुनिया में कोई भी देश सभी शरणार्थियों को स्वीकार नहीं कर सकता है। मेरे निकट आस-पास के इलाकों में एक शिविर बनाना बेहतर है। यदि ये लोग स्वीडिश समाज को लाभ पहुंचा सकते हैं, तो उन्हें स्वीकार किया जाना चाहिए। लेकिन होशियार होना आवश्यक है और सुनिश्चित करें कि उन लोगों को शरणार्थियों के रूप में स्वीकार किया जा रहा हो जो शरणार्थि हों।

मिर्ज़ा मसूर अहमद अपने काम के कारण जो आप चरमपंथ के विरोध में कर रहे हैं, दुनिया भर में यात्रा करते हैं और आपके काम को सराहा जाता है।

ख़लीफा ने कहा: यह मेरे निकट है। (समलैंगिकता) एक परेशानी है जो कुछ लोगों को है। तो उसे सार्वजनिक क्यों प्रचारित किया जाए? मैं केवल इस्लाम की शिक्षाओं का पालन करता हूं। हमारे निकट कुरआन आखरी पुस्तक है जिस में हमने अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों के साथ अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को समझाया है। नियमों को बदलने का कोई कारण नहीं है।

इस सवाल के उत्तर में क्या आप नारीवादी कहलाएंगे?

ख़लीफा ने कहा: हम सभी का सम्मान करते हैं और हर किसी को बराबर अधिकार देते हैं। चाहे पुरष हो या स्त्री युवा या बूढ़ा हो। फिर आप की इच्छा है कि आप मेरे बारे में कौन सा शब्द प्रयोग करना चाहते हैं

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

किया था इसलिए ख़ुदा ने उसकी सहायता की, उसके हृदय पर सच्चाई का इल्हाम किया और उस पर वास्तविकता स्पष्ट की गई, वह उससे अति प्रसन्न हुआ कि न्याय का मार्ग उसे प्रतीत हो गया। उसने मात्र न्याय को ध्यान में रखते हुए मुझे विपक्ष के सम्मुख कुर्सी प्रस्तुत की और जब मौलवी मुहम्मद हुसैन ने जो सरदार काहिन की भांति विरोधी साक्ष्य देने आया था मुझे कुर्सी पर बैठा हुआ पाया और मेरे बारे में जिस अपमान को देखने की उसकी मनोकामना थी उस अपमान को उसने न देखा, तब समानता को उपयुक्त समझ कर वह भी उस पैलातूस से कुर्सी का इच्छुक हुआ। परन्तु उस पैलातूस ने उसे फटकारा और डांटकर कहा कि तुझे और तेरे बाप को कभी कुर्सी नहीं मिली। हमारे कार्यालय में तुम्हारी कुर्सी के लिए कोई आदेश नहीं। अब यह अन्तर भी विचार योग्य है कि पहले पैलातूस ने यहूदियों से भयभीत होकर उनके कुछ आदरणीय साक्षियों को कुर्सी दे दी और हज़रत मसीह को जो अपराधी बतौर प्रस्तुत किए गए थे खड़ा रखा। हालांकि वह सच्चे हृदय से मसीह का शुभचिन्तक था अपितु अनुयायियों की भांति था और उसकी पत्नी मसीह की विशेष अनुयायी थी जो ख़ुदा की परम्भक्तिनी कहलाती है। परन्तु भय ने पैलातूस से यहां तक कृत्य कराया कि न्यायोचित न होते हुए भी निरपराध और निर्दोष मसीह को यहूदियों के हवाले कर दिया। मेरी भांति उन पर कोई क़त्ल का आरोप न था, केवल साधारण सा धार्मिक विवाद था। परन्तु वह रोमी पैलातूस दृढ़ हृदय वाला साहसी व्यक्ति न था। वह इस बात को सुनकर भयभीत हो गया कि क़ैसर (रोम का राजा) के पास उसकी शिकायत की जाएगी। एक और अन्य समानता तत्कालीन पैलातूस और इस पैलातूस में स्मरण रखने योग्य है कि तत्कालीन पैलातूस ने उस समय जब मसीह इब्ने मरयम न्यायालय में प्रस्तुत किया गया, यहूदियों को कहा था कि मैं इस व्यक्ति में कोई पाप नहीं देखता। ऐसा ही जब यह आख़िरी मसीह इस आख़िरी पैलातूस के सामने प्रस्तुत हुआ और इस मसीह ने कहा कि मुझे उत्तर देने के लिए कुछ दिन की मुहलत दी जानी चाहिए कि मुझ पर क़त्ल का आरोप लगाया जाता है। तब इस आख़िरी पैलातूस ने कहा कि मैं आप पर कोई आरोप नहीं लगाता। दोनों पैलातूस के यह दोनों कथन परस्पर बिल्कुल समान हैं। यदि अन्तर है तो केवल इतना कि पहला पैलातूस अपने इस वचन पर क़ायम न रह सका और जब उसे कहा गया कि कैसर के पास तेरी शिकायत करेंगे तो वह भयभीत हो गया और हज़रत मसीह को उसने जानबूझ कर निर्दयी यहूदियों के हवाले कर दिया यद्यपि कि वह और उसकी पत्नी उनको हवाले करके शोकाकुल थे, क्योंकि वे दोनों मसीह के बहुत बड़े अनुयायी थे। परन्तु यहूदियों का अत्यधिक शोर-शराबा देख कर उस पर कायरता छा गयी। हाँ गुप्त रंग में उसने बहुत प्रयास किया कि मसीह की जान को सलीब से बचा लिया जाए। इस प्रयास में वह सफल भी हो गया परन्तु इसके पश्चात कि मसीह को सलीब पर चढ़ा दिया गया, और अत्यधिक पीड़ा से वे इतना बेहोश हो गया जैसे वह मर ही गया हो। बहरहाल रोमी पैलातूस के प्रयास से मसीह इब्ने मरयम की जान बच गई और जान बचने के लिए पहले से ही मसीह की प्रार्थना स्वीकार हो चुकी थी। देखिए इबरानिया अध्याय 5 आयत 7.

**हाशिया :-** मसीह ने भविष्यवाणी के तौर पर स्वयं भी कहा कि यूनुस के निशान के अतिरिक्त और कोई निशान नहीं दिखलाया जाएगा। अत: मसीह ने अपने कथन में इस ओर संकेत दिया कि जिस प्रकार यूनुस ने जीवित ही मछली के पेट में प्रवेश किया और जीवित ही निकला। इसी प्रकार मैं भी जीवित ही क़ब्र में प्रवेश करूंगा और जीवित ही निकलूंगा अत: यह निशान इसके अतिरिक्त और कैसे पूरा हो सकता था कि मसीह जीवित ही सलीब से उतारा जाता और जीवित ही क़ब्र में प्रवेश करता। यह तो हज़रत मसीह ने कहा कि कोई और निशान नहीं दिखाया जाएगा। इस वाक्य में वास्तव में मसीह उन लोगों का रद्द करता है जो कहते हैं कि मसीह ने यह निशान भी दिखलाया कि आकाश पर चढ़ गया। इसी से।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 55 से 57)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad